

अध्याय सात : सामाजिक पूर्वाधार तथा सेवा

७.१ शिक्षा

७.१.१ जिल्लाको शैक्षिक तथा साक्षरता स्थिति

उन्नत समाजको निर्माण, चेतनशिल मानव संसाधनको विकास र सुयोग्य नागरिक उत्पादन गर्न शिक्षा क्षेत्रको विकास अति आवश्यक छ । यसैले शिक्षा आर्जनमा प्रत्येक जिल्ला बासीको सहज पहुँच हुनु आवश्यक हुन्छ । जिल्लाको शैक्षिक विकासका लागि स्थानीय जनचासो, उत्साह र अभिभावकहरुको प्रत्यक्ष संलग्नता हुनु पर्दछ । विद्यालय जाने उमेरका जनसंख्याको आधारमा आवश्यक शैक्षिक पूर्वाधारहरुको विकासका साथै तालिम प्राप्त शिक्षकको व्यवस्था गर्न सके मात्रै शिक्षामा सबैको पहुँच सुनिश्चित गर्न सकिन्छ ।

(क) शैक्षिक संस्था

शैक्षिक सत्र २०६१/६२ को तथ्याङ्क अनुसार यस जिल्लामा सरकारी ५२८, निजी ३६, उच्च मा.वि. ९ र क्याम्पस १ समेत गरी जम्मा ५९९ शैक्षिक संस्थाहरु रहेको देखिन्छ ।

तालिका ७.१ : जिल्ला स्थित शैक्षिक संस्थाहरुको विवरण

(संख्या)

| तह | सरकारी विद्यालय | नीज विद्यालय | सामुदायमा हस्तान्तरण | जम्मा |
|----------------|-----------------|--------------|----------------------|-------|
| पूर्व प्रा.वि. | ८८ | - | | ८८ |
| प्रा.वि. | ३२९ | १७ | ३५ | ३८१ |
| नि.मा.वि. | ४२ | १२ | | ५४ |
| मा.वि. | ५९ | ७ | | ६६ |
| उच्च मा.वि. | ९ | | | ९ |
| कलेज | १ | | | १ |
| जम्मा | ५२८ | ३६ | ३५ | ५९९ |

श्रोत : जिल्ला तथ्यांक कार्यालय, नुवाकोट २०६३ ।

विद्यालयको किसिम अनुसारको संख्या हेर्दा प्रथमिक कक्षा संचालन गर्ने सामुदायिक (सरकारी) विद्यालय सबभन्दा अधिक र त्यसपछि १-५ कक्षा संचालन गर्ने सामुदायिक (सरकारी) माध्यमिक विद्यालय रहेको देखिन्छ ।

(ख) विद्यालय जाने उमेरका जनसंख्या र भर्ना

तालिका ७.१ को तथ्याङ्क विश्लेषण गर्दा पूर्व प्रा.वि. तहको अध्ययनमा विद्यालय उमेरका केटाकेटीको ११.७८ प्रतिशत मात्र सहभागी रहेको देखिन्छ । प्राथमिक तहमा भने विद्यालय जाने उमेरका केटाकेटीको तुलनामा विद्यालय भर्ना भएको विद्यार्थी ३९.६ प्रतिशत वढी छ । यो सहजै देखिने भर्ना संख्या हो । निम्न माध्यमिक एवं माध्यमिक तहमा ५५.०५ प्रतिशत र उच्च

माध्यमिक विद्यालय (+ २) मा ४.०३ प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालयमा भर्ना भएका छन् । जिल्लाका उच्च मा.वि. र क्याम्पस तहमा अध्ययन गर्ने विद्यार्थी ज्यादै न्यून देखिन्छ ।

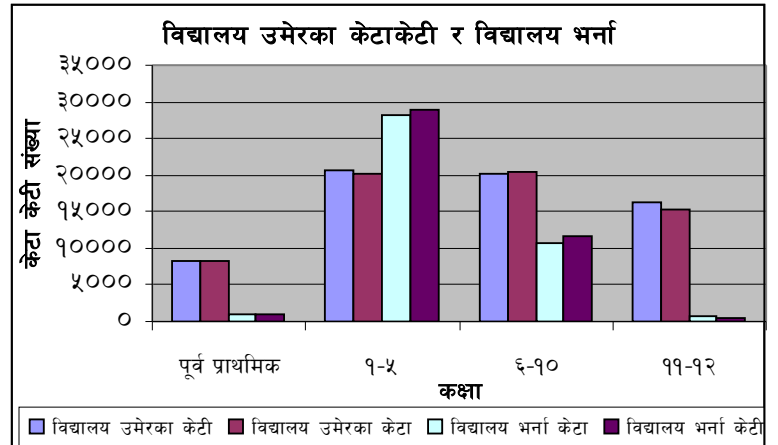
तालिका ७.२ : विद्यालय उमेरका केटाकेटी र विद्यालय भर्ना भएका विद्यार्थीको तुलनात्मक स्थिति

| विवरण | उमेर वर्ष | विद्यालय उमेरका जनसंख्या | | | विद्यालय भर्ना भएका विद्यार्थी | | |
|--------------------------------------|-----------|--------------------------|-------|--------|--------------------------------|-------|-------|
| | | केटी | केटा | जम्मा | केटी | केटा | जम्मा |
| पूर्व प्राथमिक तह (बाल विकास) | ३-५ | ८३१४ | ८३०१ | १६६१५ | ९६६ | ९९२ | १९५८ |
| प्राथमिक तह (१-५ कक्षा) | ६-१० | २०५८४ | २०२०९ | ४०७९३ | २८१०७ | २८८३७ | ५६९४४ |
| निम्न मा. / माध्यमिक तह (६-१० कक्षा) | ११-१६ | २०२०४ | २०४०६ | ४०६१० | १०६८० | ११६७८ | २२३५८ |
| उच्च माध्यमिक तह (+२) | १७ + | १६२८५ | १५२४२ | ३१५२७ | ६७८ | ५९३ | १२७१ |
| जम्मा | | ६५३८७ | ६४१५८ | १२९५४५ | १०४३१ | ४२१०० | ८२५३१ |

श्रोत: जिल्ला शिक्षा कार्यालय, नुवाकोट २०६२ तथा राष्ट्रिय जनगणना, २०५८

(ग) पूर्व प्राथमिक शिक्षा

पूर्व प्राथमिक उमेर (३-५ वर्ष) का १६६१५ बाल बालिका मध्ये १ ९५८ जनाले २३ वटा निजी विद्यालय तथा ८८ वटा अनुदान प्राप्त बाल विकास केन्द्रहरु गरी जम्मा ११८ संस्थाहरुमा पूर्व प्रा.वि. शिक्षा हासिल गरिरहेका छन् ।



(घ) प्राथमिक शिक्षा

जिल्लाका ६१ वटा गा.वि.स. र १ वटा नगरपालिकालाई १७ वटा स्रोतकेन्द्रमा समेटिएको छ । त्रिशुली स्रोतकेन्द्रमा नगरपालिका मात्र पर्दछ भने सामरी स्रोतकेन्द्रमा ६ वटासम्म गा.वि.स.लाई राखिएको छ । स्रोतकेन्द्रगत रूपमा हेर्दा जिल्ला भरी रहेको गाउँ/टोलको संख्या ८९९ देखिन्छ र जम्मा ४९० वटा प्राथमिक विद्यालयले ती गाउँ/टोलहरुलाई शैक्षिक सेवा प्रदान गरेको छ । यसैगरी जिल्लाका पाँचवटा स्रोतकेन्द्रमा १/१ गरी ५ वटा बैकल्पिक विद्यालय पनि सञ्चालित छन् ।

तालिका ७.३ : स्रोत केन्द्रले समेटेका गाउँ र विद्यालय

| क्र.सं. | स्रोत केन्द्र | गा.वि.स/ न.पा (संख्या) | गाउँ (संख्या) | प्रथामिक विद्यालय भएका गाउँ | वैकल्पिक पठनपाठनको सुविधा भएका गाउँहरु | प्रथामिक विद्यालय नभएका गाउँ |
|---------|---------------|------------------------------|------------------|-----------------------------------|--|------------------------------------|
| १ | दुई पिपल | ३ | ४७ | २८ | १ | १९ |
| २ | चाउथे | ३ | २० | २५ | १ | -५ |
| ३ | मदानपुर | ३ | ४५ | २६ | | १९ |
| ४ | लामागाउँ | ३ | ७८ | ३४ | | ४४ |
| ५ | सुनखानी | ४ | २०५ | २७ | | १७८ |
| ६ | लिखु | ५ | ४३ | ३२ | | ११ |
| ७ | शिखरवैसी | २ | २१ | १५ | | ६ |
| ८ | राउत वैशी | ३ | १८ | २४ | | -६ |
| ९ | थप्रेक | ५ | २६ | ३५ | १ | -९ |
| १० | नर्जामाण्डप | ५ | ४५ | २९ | | १६ |
| ११ | हाल्देकालिका | ४ | २४ | २८ | | -४ |
| १२ | गोर्खु | ३ | ४९ | ३० | | १९ |
| १३ | त्रिशुली | १ | ३४ | ३५ | १ | -१ |
| १४ | चारघरे | ३ | २९ | ३१ | | -२ |
| १५ | बुधसिं | ४ | ४० | ३२ | | ८ |
| १६ | सामरी | ६ | ३९ | २४ | | १५ |
| १७ | फिकुरी | ५ | १३६ | ३५ | १ | १०१ |
| | जम्मा | ६२ | ८९९ | ४९० | ५ | ४०९ |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना , नुवाकोट २०६२

उपरोक्त तालिका अनुसार ८९९ गाँउमा जम्मा ४९० वटा प्रथामिक विद्यालय रहेका र ४०९ गाँउहरुमा प्रथामिक विद्यालय नभएको देखिन्छ । सुनखानी श्रोत केन्द्र अन्तर्गत २०५ गाँउ भएको तर प्रा.वि २७ वटा मात्र रहेको देखिन्छ । त्यस्तै फिकुरी श्रोत केन्द्र अन्तर्गत १३६ गाँउ भएको तर प्रथामिक विद्यालय भने ३५ वटा मात्र रहेको देखिन्छ ।

जिल्लाको ४९० प्राथमिक विद्यालयमा ५६९४४ विद्यार्थी अध्ययनरत छन् । यी मध्ये आधा (५०.६ प्रतिशत) छात्रा छन् । कक्षागत विद्यार्थी स्थिति तालिका ७.४ मा दिइएको छ ।

तालिका ७.४ : प्राथमिक तहको विद्यार्थी विवरण

| विवरण | छात्रा | | छात्र | | जम्मा |
|---------|--------|---------|--------|---------|-------|
| | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | |
| कक्षा १ | १०३३५ | ३५.८ | ९२९० | ३३.१ | १९६२५ |

| | | | | | |
|---------|-------|-------|-------|-------|-------|
| कक्षा २ | ५७३७ | १९.९ | ६२७१ | २२.३ | १२००८ |
| कक्षा ३ | ४६६५ | १६.२ | ४८१६ | १७.१ | ९४८१ |
| कक्षा ४ | ४२९९ | १४.९ | ४१४८ | १४.८ | ८४४७ |
| कक्षा ५ | ३८०१ | १३.२ | ३५८२ | १२.७ | ७३८३ |
| जम्मा | २८८३७ | १००.० | २८१०७ | १००.० | ५६९४४ |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना, नुवाकोट २०६२।

प्राथमिक तहका कूल विद्यार्थी मध्ये कक्षा १ मा भर्ना भै अध्ययनरत गर्नेको संख्य अधिक देखिन्छ। यसबाट कक्षा दोहोर्न्याउनेको संख्या अत्यधिक हुन सक्ने अवस्था देखिन्छ।

तालिका ७.५ : प्रा.वि. तहका कार्यरत शिक्षक शिक्षिकाको स्थिति विवरण

| क्र.सं. | विवरण | शिक्षक | शिक्षिका | जम्मा |
|---------|----------------------|--------|----------|-------|
| १ | कार्यरत शिक्षक | ९७६ | १९१ | ११६७ |
| २ | स्थायी शिक्षक | ७७० | ७९ | ८४९ |
| ३ | तालिम प्राप्त शिक्षक | ५३६ | ११५ | ६५१ |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना, नुवाकोट २०६२

(ङ) निम्न माध्यमिक तथा माध्यमिक शिक्षा

जिल्लाका ५४ नि.मा.वि. र ६६ मा.वि. मध्ये नि.मा.वि. मा १५८४३ र मा.वि. मा ६५१५ विद्यार्थी अध्ययनरत छन्। यिनीहरूको कक्षागत र लैङ्गिक स्थिति तालिका ७.६ मा दिइएको छ।

तालिका ७.६ : निम्न माध्यमिक तथा माध्यमिक तहको विद्यार्थी विवरण

| विवरण | छात्रा | | छात्र | | जम्मा |
|-----------------|--------|---------|--------|---------|-------|
| | संख्या | प्रतिशत | संख्या | प्रतिशत | |
| कक्षा ६ | ३०९८ | ४८.०७ | ३३४७ | ५१.९३ | ६४४५ |
| कक्षा ७ | २४१६ | ४८.०२ | २६१५ | ५१.९७ | ५०३१ |
| कक्षा ८ | २०९८ | ४८.०४ | २२६९ | ५१.९३ | ४३६७ |
| नि.मा.वि. जम्मा | ७६१२ | ४८.०४ | ८२३१ | ५१.९५ | १५८४३ |
| कक्षा ९ | १७८९ | ४७.१० | २००९ | ५२.८९ | ३७९८ |
| कक्षा १० | १२७९ | ४७.०७ | १४३८ | ५२.९२ | २७१७ |
| मा.वि. जम्मा | ३०६८ | ४७.०९ | ३४४७ | ५२.९० | ६५१५ |
| कूल जम्मा | १०६८० | | ११६७८ | | २२३५८ |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना, नुवाकोट २०६२

तालिका ७.६ अनुसार कक्षा ६ देखि कक्षा १० सम्मका हरेक कक्षामा विद्यार्थीको संख्या घट्दो अवस्थामा देखिन्छ। छात्रा तर्फ ६ कक्षामा ३०९८ विद्यार्थी भएकोमा १० कक्षामा १२७९ मात्र छन्। लैंगिक विभाजन अनुसार हेर्दा कक्षा ६ देखि ८ सम्म छात्र ५२ प्रतिशत छात्रा ४८ प्रतिशत रहेको देखिन्छ। कक्षा ९ र १० मा भने छात्र ५३ प्रतिशत र छात्रा ४७ प्रतिशत रहेको छ।

(छ) प्रवेशिका परीक्षा

जिल्लाको शैक्षिक गुणस्तर झल्कने सूचकका रूपमा प्रवेशिका परीक्षा उत्तिर्ण दरलाई लिन सकिन्छ । विगत वर्षहरुको प्रवेशिकामा सहभागी र परीक्षा उत्तिर्ण विवरण तालिका ७.८ मा दिइएको छ ।

तालिका ७.७ : प्रवेशिका परीक्षा उत्तीण स्थिति

| क्र.स. | वर्ष | सहभागी | | | प्रवेशिका परीक्षा उत्तिर्ण | | | | | | | | | प्रतिशत |
|--------|------|--------|-------|--------|----------------------------|-------|--------|----------------|-------|--------|--------------|-------|--------|---------|
| | | | | | प्रथम श्रेणी | | | द्वितीय श्रेणी | | | तृतीय श्रेणी | | | |
| | | जम्मा | छात्र | छात्रा | जम्मा | छात्र | छात्रा | जम्मा | छात्र | छात्रा | जम्मा | छात्र | छात्रा | |
| | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा कार्यालय, नुवाकोट ।

(ज) क्याम्पस तथा उच्च मा.वि.

जिल्लाका ९ उच्च मा.वि. र १ क्याम्पसमा अध्ययनरत विद्यार्थीको विवरण तालिका नं. ७.९ मा दिइएको छ । यी उच्च मा.वि र क्याम्पसमा अध्ययनरत कुल विद्यार्थी मध्ये ५३.७ प्रतिशत छात्र र ४६.७ प्रतिशत छात्रा रहेका छन् ।

तालिका ७.८ : क्याम्पस तथा उच्च मा.वि. र अध्ययनरत विद्यार्थी विवरण

(आ.व. २०६१/०६२)

| क्र.सं. | विवरण | अध्यापन तह | विद्यार्थी संख्या | | |
|---------|---|------------------------|-------------------|--------|-------|
| | | | छात्र | छात्रा | जम्मा |
| १ | नुवाकोट आदर्श बहुमुखि क्याम्पस (व्यवस्थापन शिक्षा, मानविकी) | १०+२ प्र विणता, स्नातक | ३२० | १९७ | ५१७ |
| २ | श्री त्रि.त्रि.उ.मा.वि. त्रिशुली (शिक्षा, व्यवस्थापन र मानविकी) | १०+२ | १७५ | २०५ | ३८० |
| ३ | श्री चण्डेश्वरी उ.मा.वि. (मानविकी) | १०+२ | ९६ | ६९ | १६५ |
| ४ | श्री रण भुवनेश्वरी उ.मा.वि. (शिक्षा, व्यवस्थापन) | १०+२ | ५२ | ८१ | १३३ |
| ५ | श्री वागेश्वरी उ.मा.वि. (शिक्षा, मानविकी) | १०+२ | ३५ | ४१ | ७६ |
| ६ | श्री अमरज्योती उ.मा.वि. (शिक्षा, व्यवस्थापन) | १०+२ | २९ | ३६ | ६५ |
| ७ | श्री भवानी उ.मा.वि. (शिक्षा) | १०+२ | | | |
| | जम्मा | | ६७८ | ५९३ | १२७१ |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना, नुवाकोट २०६२

(च) शैक्षिक उपलब्धि सूचक

जिल्लाको शैक्षिक उपलब्धि सूचक तालिका ७.९ मा दिइएको छ ।

तालिका ७.९ : शैक्षिक उपलब्धि सूचक

| क्र.सं. | विवरण | २०६०।०६१ | योग्यताको अन्त्य सम्मको अनुपात |
|---------|--|----------|--------------------------------|
| १. | पूर्व प्रा.वि. स्तरमा सहजै देखिने विद्यार्थी भर्ना दर | २४.० | ४५.० |
| २. | पूर्व प्रा.वि. स्तरमा खुद देखिने विद्यार्थी भर्ना दर | | ३५.० |
| ३. | प्रा.वि. (१-५) स्तरमा सहजै देखिने भर्ना दर | १२४ | ११० |
| ४. | प्रा.वि. (१-५) स्तरमा खुद देखिने भर्ना दर | ८५ | ९० |
| ५. | प्रा.वि.तहको योग्यता पुगेका शिक्षक प्रतिशत | ४७.७ | १०० |
| ६. | प्रा.वि.तहका शिक्षक विद्यार्थी अनुपात | १:४७ | १:४ |
| ७. | प्रा.वि. (कक्षा १) मा कक्षा दोहोर्‍याउने दर | ३९.३ | १० |
| ८. | प्रा.वि. (कक्षा ५) मा कक्षा दोहोर्‍याउने दर | १४.७ | ३ |
| ९. | प्रा.वि. (कक्षा ५) मा अडिने (retention) दर | ३६.४ | ८० |
| १०. | प्रा.वि. (कक्षा ५) सिकार्य उपलब्धि प्रतिशत | ४५.१ | ६५ |
| ११. | प्रा.वि. (कक्षा ५) को उत्तिर्ण दर | ९५.० | १०० |
| १२. | प्रा.वि. (कक्षा १-५) को उत्तिर्ण दर | ८५.० | ९५ |
| १३. | प्रा.वि. (कक्षा १-५) मा दलित मात्रको कक्षा उत्तिर्ण दर | ६७.० | ८० |
| १४. | प्रा.वि. (कक्षा १-५) मा दलित सहजै देखिने भर्ना दर | ९६.८ | ९६ |
| १५. | प्रा.वि. (कक्षा १-५) मा दलित खुद देखिने भर्ना दर | ८०.६ | ९५ |
| १६. | प्रा.वि.तह पार गर्ने दर | २६.० | ५० |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना, नुवाकोट २०६२

७.१.२ शैक्षिक संस्थामा भौतिक सुविधा

कूल ५९९ मध्ये ४६१ शैक्षिक संस्थाको आफ्नै भवन भएको देखिएको छ । तर सबैमा शौचालय सुविधा भएको देखिंदैन । खानेपानी सुविधा २२७ संस्थामा मात्र देखियो भने फर्निचर पुगेको विद्यालय १०१ मात्र रहेको देखिएको छ ।

जिल्लामा शैक्षिक एवं भौतिक सुविधा उपलब्धता अनुसार शैक्षिक संस्थाको संख्या तालिका ७.१० मा दिइएको छ ।

तालिका ७.१० शैक्षिक एवं भौतिक सुविधा सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | विवरण | संख्या |
|---------|--|--------|
| १ | आफ्नो भवन भएका विद्यालय | ४६१ |
| २ | मर्मत सम्भार/पुननिर्माण गर्नु पर्ने विद्यालय | ३४० |
| ३ | अतिरिक्त कक्षा कोठा आवश्यक पर्ने विद्यालय | २८७ |
| ४ | शौचालय सुविधा पुगेका विद्यालय | ३०२ |
| ५ | छात्राका लागि शौचालय पुगेका विद्यालय | ७९ |
| ६ | खानेपानी सुविधा पुगेका विद्यालय | २२७ |
| ७ | फर्निचर सेट पुगेको विद्यालय | १०१ |
| ८ | कक्षा कोठामा कालो पाटी पुगेको विद्यालय | ३५५ |
| ९ | कम्पाउण्डवाल भएका विद्यालय | ६१ |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा योजना, नुवाकोट २०६२ ।

७.१.३ साक्षरता स्थिति

यस जिल्लाको औषत साक्षरता दर ५१.४ प्रतिशत रहेको छ । महिला साक्षरता दर ४०.७ प्रतिशत र पुरुष साक्षरता दर ६२.४ प्रतिशत रहेको छ । राष्ट्रिय औषत साक्षरता दर ५४.१ प्रतिशत, महिला साक्षरता दर ४२.८ प्रतिशत र पुरुष साक्षरता दर ६५.५ प्रतिशत को तुलनामा नुवाकोट जिल्लाको साक्षरता दर त्यति नराम्रो देखिदैन ।

तालिका ७.११ : जिल्लाको शैक्षिक तथा साक्षरता स्थिति

| क्र.सं. | विवरण | इकाई | मान | कैफियत |
|---------|---|--------|-------|-----------------------|
| १. | औषत दर (overall literacy rate) | % | ५१.४ | २०६०/६१ |
| | - पुरुष साक्षरता दर | % | ६२.४ | |
| | - महिला साक्षरता दर | % | ४०.७ | |
| | - प्रौढ साक्षरता दर | % | ४२.४ | |
| | - प्रौढ साक्षरता दर (पुरुष) | % | ५७.० | |
| | - प्रौढ साक्षरता दर (महिला) | % | २९.१ | |
| २. | विद्यार्थी शिक्षक अनुपात | अनुपात | ४०.४ | २०६०/६१ |
| | - प्रा.वि. तहको विद्यार्थी शिक्षक अनुपात | अनुपात | ४२.६ | |
| | - निम्न माध्यमिक विद्यालय तहको विद्यार्थी शिक्षक अनुपात | अनुपात | ४४.७ | |
| | - माध्यमिक विद्यालय तहको विद्यार्थी शिक्षक अनुपात | अनुपात | २२.३ | |
| ३. | प्रति हजार जनसंख्यामा विद्यालय संख्या | संख्या | २.१ | |
| | - प्रति हजार जनसंख्यामा प्रा. वि. संख्या | संख्या | १.६ | ६२५ = १ प्रा.वि. |
| | - प्रति हजार जनसंख्यामा नि. मा. वि. | संख्या | ०.३२ | ३१३२ = १ नि.मा.वि. |
| | - प्रति हजार जनसंख्यामा मा. वि. | संख्या | ०.२० | ५००० = १ मा.वि. |
| ४. | सवै तहमा कूल भर्ना दर | अनुपात | ८४.८ | २०६०/६१ |
| | - प्राथमिक तहमा कूल भर्ना दर | अनुपात | १२१.५ | |
| | - निम्न माध्यमिक तहमा कूल भर्ना दर | अनुपात | ५४.५ | |
| | - माध्यमिक तहमा कूल भर्ना दर | अनुपात | ३७.० | |
| | - सवै तहमा महिला भर्ना दर | अनुपात | ७६.२ | |
| | - सवै तहमा पुरुष भर्ना दर | अनुपात | ९३.४ | |
| ५. | शिक्षक विद्यालय अनुपात | अनुपात | २.९ | २०६०/६१ |
| | - प्राथमिक तहमा शिक्षक विद्यालय अनुपात | अनुपात | २.८ | १ विद्यालयमा २.७९ जना |
| | - निम्न माध्यमिक शिक्षक विद्यालय अनुपात | अनुपात | २.९ | १ विद्यालयमा २.९४ जना |
| | - माध्यमिक तहमा शिक्षक विद्यालय अनुपात | अनुपात | ३.८ | १ विद्यालयमा ३.८० जना |

श्रोत: जिल्ला वस्तुगत विवरण, शाखा तथ्यांक कार्यालय, नुवाकोट २०६२

जिल्लामा गा.वि.सं , न.पा. अनुसारको साक्षरता स्थिति तालिका ७.१२ मा दिइएको छ । यस अनुसार साक्षरता प्रतिशत विदुर न.पा.मा सबैभन्दा बढी (६४.९ प्रतिशत) र घ्याडफेरी गा.वि.स.मा सबैभन्दा कम (१०.६ प्रतिशत) रहेको देखिन्छ ।

तालिका ७.१२: गा.वि.स.हरुमा साक्षरता स्थिति

| क्र.सं. | गा.वि.स./न.पा.को नाम | साक्षरता प्रतिशत | | | महिला र पुरुष साक्षरतामा अन्तर |
|---------|----------------------|------------------|--------|-------|--------------------------------|
| | | औसत | पुरुषक | महिला | |
| १ | लिखु | ४७.४ | ५९.० | ३६.९ | २२.१ |
| २ | शिक्रे | ६३.१ | ७६.५ | ५१.१ | २५.४ |
| ३ | छाप | ३७.७ | ४७ | २९.४ | १७.५ |
| ४ | तलाखु | ३९.४ | ४४.६ | ३४.१ | १०.५ |
| ५ | महाकाली | ४७.७ | ५९.७ | ३६.२ | २३.५ |
| ६ | समुन्द्रादेवी | ४९.८ | ५४.७ | ४४.६ | १०.२ |
| ७ | थानापती | ४६.१ | ५३.७ | ३९.४ | १४.३ |
| ८ | थानसिं | ५९.४ | ७२.८ | ४७ | २५.८ |
| ९ | चतुराले | ५४.६ | ६५.५ | ४३.५ | २२.० |
| १० | सुनखानी | ५०.८ | ५९.६ | ४२.४ | १७.१ |
| ११ | ओखरपौवा | ३१.४ | ४० | २२.५ | १७.५ |
| १२ | ककनी | ४८.४ | ६१.५ | ३५ | २६.५ |
| १३ | मदानपुर | ४७.२ | ६०.० | ३५.३ | २४.८ |
| १४ | सूर्यमती | ३७.६ | ४८ | २८.२ | १९.७ |
| १५ | चाउथे | ५१.९ | ६५.५ | ३८.० | २७.५ |
| १६ | वेलकोट | ४२.१ | ५०.३ | ३३.७ | १६.६ |
| १७ | जिलिङ | ५७.२ | ६८.९ | ४६.८ | २२.१ |
| १८ | कुमरी | ३६.५ | ४६.२ | २६.८ | १९.३ |
| १९ | रातमाटे | ४९.१ | ६२.६ | ३५.४ | २७.२ |
| २० | दुईपिपल | ३८.८ | ४७.६ | २९.८ | १८ |
| २१ | तारुका | ४७.१ | ५७ | ३८.७ | १८.३ |
| २२ | बुधसिङ | ४२.९ | ५६.४ | ३१.६ | २४.९ |
| २३ | दाडसिङ | २९.९ | ३८.९ | २१.८ | १७.१ |
| २४ | गोस्यार्ड | ३७.८ | ४५.० | ३०.६ | १४.४ |
| २५ | कल्याणपुर | ४०.५ | ४९.८ | ३२.१ | १७.७ |
| २६ | सामरी | ३६ | ४९.७ | २३.७ | २६.० |
| २७ | बुडताङ | ४२.३ | ४८.५ | ३७.१ | ११.४ |
| २८ | वसुन्चेत | ५०.१ | ५६.९ | ४२.९ | १४.० |
| २९ | देउराली | ३५.३ | ४७.२ | २४.२ | २३.० |
| ३० | साल्मे | २९.५ | ३९.१ | १५.५ | २३ |
| ३१ | भाल्चे | २४.७ | ४०.० | ९.३ | ३०.७ |
| ३२ | फिकुरी | ५०.८ | ६१.५ | ४०.६ | २०.९ |
| ३३ | किम्ताङ | ४२.३ | ४८.५ | ३७.१ | ११.४ |
| ३४ | काउले | ४८.२ | ५७.५ | ४०.५ | १७.० |

| क्र.सं. | गा.वि.स./न .पा.को नाम | साक्षरता प्रतिशत | | | महिला र पुरुष साक्षरतामा अन्तर |
|---------|--------------------------|------------------|--------|-------|-----------------------------------|
| | | औसत | पुरुषक | महिला | |
| ३५ | वि.न.पा. | ६४.९ | ७७.६ | ५२.९ | २४.७ |
| ३६ | चारघरे | ३९.४ | ५४.३ | २४.२ | ३०.१ |
| ३७ | खड्गभन्ज्याड | ४८.७ | ५९.९ | ३८.१ | २१.८ |
| ३८ | मनकामना | ५२.२ | ६१.५ | ४३.५ | १८ |
| ३९ | तुप्चे | ६०.७ | ६८.८ | ५३.२ | १५.६ |
| ४० | लच्याड | १३.९ | १९.२ | ८.४ | १०.८ |
| ४१ | खानीगांउ | ५३.५ | ६९.२ | ३९.७ | २९.५ |
| ४२ | हल्देकालीका | ३७.१ | ४८.० | २५.९ | २२.१ |
| ४३ | गेर्खु | ४५.९ | ५६.५ | ३६ | २०.५ |
| ४४ | वागेश्वरी | ४६.९ | ५८.६ | ३५.७ | २२.८ |
| ४५ | चौघडा | ४६.७ | ६२.५ | ३३.२ | २९.३ |
| ४६ | गणेशस्थान | ५१.८ | ६५.३ | ३८.३ | २७.० |
| ४७ | नर्जामण्डप | २७.५ | ३६.० | १८.७ | १७.३ |
| ४८ | उर्लेनी | १३.९ | २० | ७.५ | १२.५ |
| ४९ | खरानीटार | ४२.२ | ४९.९ | ३५.२ | १४.७ |
| ५० | कविलास | ४२.० | ४८.९ | ३४.९ | १४ |
| ५१ | पञ्चकन्या | ५२ | ५७.५ | ४६ | ११.५ |
| ५२ | थप्रेक | ३५.३ | ४६ | २४.८ | २१.२ |
| ५३ | भद्रुटार | ४१.६ | ४९.० | ३३.७ | १५.३ |
| ५४ | सिखरवेसी | २३.८ | २७.६ | १९.७ | ७.९ |
| ५५ | समुन्द्रटार | ४५.३ | ६०.१ | ३१.८ | २८.३ |
| ५६ | सुन्दरादेवी | ५२.५ | ६४ | ४०.७ | २३.३ |
| ५७ | रालुकादेवी | ५१.३ | ६१.१ | ४१.५ | १९.६ |
| ५८ | बालकुमारी | ३२.६ | ४०.३ | २५ | १५.३ |
| ५९ | घ्याडफेदी | १०.६ | १३.७ | ६.९ | ८ |
| ६० | गाउंखर्क | ३०.१ | ३५.२ | २५.२ | १० |
| ६१ | राउतवेसी | ३३.८ | ३९.१ | २८.४ | १०.७ |
| ६२ | वेतिनी | १७.९ | २५.२ | १०.८ | १४.४ |

श्रोत: जिल्ला वस्तुगत विवरण, शाखा तथ्यांक कार्यालय नुवाकोट, २०६२।

जिल्लाको औषत साक्षरता दर (५१.४ प्रतिशत) को तुलनामा बढी साक्षरता भएका, उस्तै साक्षरता र कम साक्षरता भएका गा.वि.स.हरु निम्न बमोजिम छन् ।

तालिका ७.१३ : जिल्लाको औषत साक्षरता दर भन्दा बढी, उस्तै र कम हुने गा.वि.स.हरु

| क्र.सं. | बढी हुने गा.वि.स./न.पा ५४.६%- ६४.९% | उस्तै गा.वि.स. ५०.१%- ५३.५% | साह्रै न्युन १०%-१७% |
|---------|--|--------------------------------|-------------------------|
| १ | विदुर | सुनखानी | वेतिनी (१७%) |
| २ | शिक्रे | चाउथे | ध्याडफेरी (१०%) |
| ३ | थानसिं | वर्सुन्चेत | उर्लेनी (१३.९%) |
| ४ | चतुराले | फिकुरी | लच्याड (१३.९%) |
| ५ | जिलिङ | मनकामना | |
| ६ | तुप्चे | खानीगाउँ | |
| ७ | | गणेशस्थान | |
| ८ | | पन्चकन्या | |
| ९ | | सुन्दरादेवी | |

७.१.४ शिक्षा क्षेत्रका विद्यमान समस्या र सवालहरु

१. जिल्लामा महिला साक्षरता प्रतिशत पुरुष साक्षरता प्रतिशत भन्दा कम देखिएको छ । महिलालाई विद्यालय पठाउने चलनको अभै विकास भएको देखिदैन भने विचमा छाडेर विवाह गरिदिने र विवाह गरेपछि पढ्ने चलन नभएको सामाजिक कारणले गर्दा महिला साक्षरता कम रहेको छ । छोरी वुहारीलाई पढाउनका लागि सामाजिक जागरण ल्याउनु पर्ने देखिन्छ । विकट गा.वि.स.हरुमा यस्तो ज्ञानको कमीले गर्दा नै महिला साक्षरता प्रतिशतमा कमी रहेको देखिन्छ । यसका अन्य कारणहरुमा भौगोलिक जटिलताका आतिरिक्त आर्थिक पछ्यौटेपन, अज्ञानता, सामाजिक कुरीति, शिक्षकहरुको अनुपस्थिति र जि.शि.का. बाट पनि अनुगमन, मुल्याङ्कन गर्न कठिनाई तथा श्रोत साधनको पर्याप्त व्यवस्था हुन नसक्नु आदि हुन ।
२. प्राथमिक शिक्षा स्तरमा कक्षा दोहोर्‍याउने विद्यार्थीहरुको संख्यामा कमी आउनुको सट्टा अभ वृद्धि हुदै गएको छ ।
३. सेवा अवधि पुराभइसकेका शिक्षक शिक्षिकाहरु विद्यालयमा धेरै अनुपस्थित रहने, शिक्षण मर्यादा अनुसार लगनशिल तथा पुर्व तयारी बिना कक्षा शिक्षण गर्ने वा शिक्षण समयमा दत्तचित्त नरहने गर्ने गरेको पाईएको छ ।
४. कतिपय विद्यालयहरु स्थानीय निकायका श्रोतबाट र कतिपय स्थानीय जनताहरुको सहयोगमा संचालन भैरहेको र सरकारी निकायबाट आवश्यक सहयोग प्राप्त गर्न नसक्दा भवन, कक्षा कोठा, खेलमैदान, खानेपानी सुविधा तथा शौचालय मात्र होइन फर्निचर तथा कालोपाटी समेतको अभाव रहिआएको छ ।
५. शिक्षक शिक्षिकाहरुलाई राजनैतिक संगठन/संघहरुले आफ्नो भगिनी संस्थामा आवद्ध गराई उनीहरुलाई परिचालित गर्ने र आफ्ना सक्रिय कार्यकर्तालाई अनुचित संरक्षण दिने जस्ता विकृतिहरु देखिनाले शिक्षण पेशा राजनैतिक परिचालनको रुपमा

देखा परेको छ । यसको समाधान गर्न जि.शि.का.ले प्रयत्न गरेतापनि उद्देश्य प्राप्त गर्न कठिनाई परेको देखिएको छ ।

६. शिक्षकहरुको पदस्थापन र सरुवा गर्दा सकेसम्म घरपायक स्थानमा मिलाउनु पर्नेमा यस्तो प्रकृयाको परिपालन राम्रो संग भएको देखिदैन ।
७. स्थानीय निकाय र विद्यालयको प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहनु पर्नेमा हालसम्म त्यस्तो सम्बन्धको प्रकृति र प्रारूपको स्पष्ट प्रावधान वनेको पाइदैन ।
८. योग्य, सक्षम, कुशल र लगनशिल शिक्षकहरुलाई प्रोत्साहन दिलाउने, त्यस्तालाई वृत्ति विकासको अवसर प्रदान गर्ने, बहुवाको क्रममा कार्य सम्पादन मुल्याङ्कन निस्पक्ष रुपमा गर्ने व्यवस्था हाल सम्म अवलम्बन गरेको पाइएको छैन ।
९. उत्कृष्ट विद्यार्थीलाई पुरस्कृत गरेभै उत्कृष्ट शिक्षकलाई पुरस्कृत गर्ने परिपाटी देखिदैन ।
१०. श्रोतकेन्द्रमा रहेका श्रोत व्यक्तिहरु विद्यालय निरीक्षणमा त्यति जाने नगरेको र विद्यालयको अनुगमन मुल्याङ्कन पद्धति कमजोर र अवैज्ञानिक भएको देखिएको छ । विद्यालयका भौतिक, आर्थिक पक्षको समेत अनुगमन विश्लेषण र अध्ययन गरि सुधारका उपायहरु पहिल्याई सो अनुरूप कार्य हुने गरेको देखिदैन ।
११. आर्थिक श्रोतका अभावले कतिपय विद्यालयहरु ग्रस्त भएको पाइयो । जसले गर्दा खानेपानी, सरसफाई जस्ता पक्षहरु कमजोर रहेको र एउटै शिक्षकले धेरै कक्षा शिक्षण गर्नु पर्ने वाध्यता विद्यमान रहेको छ भने निजी विद्यालयहरुका शिक्षकको नोकरीको असुरक्षाका कारणले विचलनको स्थिति देखा पर्ने गरेको छ ।
१२. जिल्लामा सदरमुकाम आसपासका स्थानहरुमा वाहेक अन्य स्थानमा पुस्तकालय, खेल मैदान, खानेपानी, शौचालय आदिको समस्याले विद्यार्थीको विकर्षण हुने सम्भावना रहको छ ।
१३. अधिकांस स्कूलमा विद्यालयमा खाजा नास्ताका व्यवस्था नभएको र विद्यालय परिसरमा नै क्यान्टिनको व्यवस्था नभएकोले विद्यार्थी तथा शिक्षकलाई असुविधा भएको र विद्यालय छाड्ने दर बढि रहेको पाइएको छ ।
१४. समयमा नै व्यवस्थापन समिति गठन हुन नसक्नु, व्यवस्थापन समितिमा पनि राजनैतिक हस्तक्षेप हुनु र व्यवस्थापन समितिका लागि चाहिने न्युनतम योग्यता र आधारहरुको स्पष्टरुपमा निर्देशिकामा उल्लेख हुन सकेको छैन ।
१५. विज्ञान र प्रविधि तथा संचारका माध्यमहरु केही विद्यालयमा मात्र उपलब्ध हुन् ।
१६. पुराना शिक्षकहरु पुरानै ढंगले शिक्षणमा लाग्ने हुदा मनोवृत्ति परिवर्तन तथा आधुनिक शिप विकासका तालीम तथा पुनर्ताजगी तालीम दिनु पर्ने आवश्यकता देखिएको छ ।
१७. जागिरको लागि शिक्षा भन्ने सोचले वेरोजगारी रहनु नै पर्ने भएपछि किन पढ्ने भन्ने धारणा बढ्दै गएको देखिन्छ ।
१८. विद्यालयमा वेला वेलामा अभिभावक, बुद्धिजीवीहरु मिलेर मध्यावधि समिक्षा, नतिजा मूल्याङ्कन र अभिभावक भेला तथा पुर्व विद्यार्थी भेलाहरुको आयोजना गर्ने चलन नभएकोले स्वमूल्याङ्कन नै सम्पूर्ण मुल्याङ्कन मान्नु पर्ने वाध्यता रहेको छ ।

७.१.५ शिक्षा क्षेत्रका सम्भावनाहरु

जिल्लामा सरकारी बाहेक विभिन्न गैर सरकारी संघ/संस्था जस्तै नेपाल रेडक्रस सोसाईटी, सेभ द चिल्ड्रेन, एजुकेट द चिल्ड्रेनले आदि विद्यालय भवन निर्माण, छाना मर्मत, शौचालय, खेलकूद तथा शैक्षिक सामग्री, खानेपानी आदि मर्मत, सम्भार तथा सुधार गर्ने कार्यको लागि सहयोग दिएको देखिन्छ।

त्यस्तै आधारभुत तथा प्राथमिक शिक्षा परियोजनाले विद्यालयको भौतिक व्यवस्थापनमा निकै सहयोग पुऱ्याउदै आएको छ। यस अतिरिक्त विभिन्न गै.स.स.हरु औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षामा संलग्न रहेका हुँदा शिक्षा क्षेत्रको विकासको राम्रो सम्भावना देखिन्छ।

७.२ स्वास्थ्य

७.२.१ स्वास्थ्य सेवा सुविधा र स्वास्थ्य स्थिति

(क) स्वास्थ्य सेवा सुविधा

जिल्लामा उपलब्ध स्वास्थ्य संस्थाहरुको विवरण विश्लेषण गर्दा २५ वेडयुक्त ३ जना डाक्टर दरबन्दीको एक जिल्ला अस्पताल, प्रत्येकमा ३ वेड र १ जना डाक्टरको दरबन्दी रहेको ३ वटा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, १० वटा हेल्थ पोष्ट र ५३ वटा सब-हेल्थ पोष्ट गरी जम्मा ६७ वटा स्वास्थ्य संस्थाहरु रहेको देखिन्छ। तर दरबन्दी अनुसार डाक्टरहरु न जिल्ला अस्पताल नत प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रमा आकर्षित भई कार्यरत रहेका छन्। प्रति निर्वाचन क्षेत्र १/१ वटा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रहेतापनि तीनको जति विकास विस्तार हुनुपर्ने हो त्यति भएको छैन। प्रत्येक गा.वि.स. मा एक सब हे.पो. रहने व्यवस्था भएतापनि ५३ वटा सब हे.पो रहेको र बाँकी क्षेत्रमा हे.पो. द्वारा सेवा पुऱ्याउदै आएको पाइएको छ।

तालिका ७.१४ : स्वास्थ्य सेवाको सुविधा

| क्र. सं. | संस्थाको किसिम | संख्या | वेड संख्या | चिकित्सक संख्या | स्वास्थ्य सहायक तथा नर्सहरुको संख्या | कैफियत |
|----------------------------------|-------------------------|--------|------------|-----------------|--------------------------------------|-----------------------------|
| १ | जि. अस्पताल | १ | २५ | ३ | ९ | हेअ, अहेब, स्टाफ नर्स, अनमी |
| २ | प्रा.स्वा.के. | ३ | ९ | ३ | २१ | वेड अब्जरभेसनको लागी |
| ३ | हे.पो. | १० | ० | ० | ३० | हेअ, अहेब, अनमी |
| ४ | सब हे.पो. | ५३ | ० | ० | १५९ | अहेब, ग्रास्वाका, मासिका |
| स्वास्थ्य संस्थाहरु जम्मा | | ६७ | | | | |
| ५ | जिल्ला आयुर्वेद केन्द्र | १ | | | | |
| ६ | जिल्ला आयुर्वेद औषधाल | ६ | | | | |
| जनसंख्या प्रति स्वास्थ्य संस्था | | ४३०६ | | | | |

श्रोत : जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय, नुवाकोट।

जिल्लामा १ जिल्ला आयुर्वेद केन्द्र र ६ वटा औषधालय स्थापित छन् । तिनको प्रचार प्रसार तथा उचित प्रोत्साहनको अभावले गर्दा जनताहरू लाभान्वित हुन सकेका छैनन् । त्यसैले यस तर्फ पनि ध्यान दिनु आवश्यक छ । जिल्लामा लायन्स क्लबको प्रायोजनमा एक दन्त अस्पतालको समेत स्थापना भएको छ । त्यस्तै पेपाल रेड क्रस सोसाइटी, तिल गंगा आँखा अस्पताल र फेडली संस्थाको समन्वय र सहयोगमा विदुर न.पा.मा आँखा उपचार केन्द्रको स्थापना भई आँखा जाँच तथा उपचार सेवा उपलब्ध गराइदै आएको छ । स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न विवरणहरू तालिका ७.१४ मा दिइएको छ ।

स्वास्थ्य क्षेत्रका सेवा प्रदायकको रूपमा निजी क्लिनिकको हिस्सा पनि उल्लेखनीय रहेको छ । निजीक्षेत्रबाट सञ्चालित प्रमुख, अस्पताल/नर्सिङ होम/क्लिनिक देहाय बमोजिम छन् ।

१. पञ्चकन्या पोलिक्लिनिक, ढुङ्गे
२. सापकोटा मेडिकल हल एण्ड क्लिनिकहरू, वट्टार
३. सञ्जिवनी क्लिनिक, वट्टार
४. त्रिशुली क्लिनिक, त्रिशुली

तर निजी क्षेत्रबाट संचालित स्वास्थ्य सेवा बारे तथ्याङ्क उपलब्ध नभएको हुँदा यस सम्बन्धमा लेखा जोखा गर्न सक्ने स्थिति छैन । निजी स्वास्थ्य कर्मीहरूको संघ/समुह गठन नभएको र यस्ता निजी क्लिनिकहरूको सञ्जाल तयार भई नसकेकोले पनि यस सम्बन्धि तथ्याङ्कको अभाव रहेको देखियो ।

(ख) स्वास्थ्य स्थिति

राजधानी शहरको निकटमा रहेको भएतापनि यस जिल्लाका जनताको स्वास्थ्यको स्थिति त्यति सन्तोषजनक देखिदैन । स्वास्थ्य सेवाको दृष्टिमा नुवाकोट जिल्ला निम्न मध्यम स्थितिमा रहेको देखिन्छ ।

भौतिक सुविधाको अभाव तथा पर्याप्त स्वास्थ्यकर्मीको अभाव अन्य जिल्लामाभै यस जिल्लामा पनि टड्कारो देखिन्छ । डाक्टर र जनसंख्याको अनुपात एकदम बढी देखिन्छ । जिल्लामा भएको एक मात्र अस्पतालमा पनि बेड संख्या ज्यादै न्युन देखिन्छ । प्रतिवेड १२४२८ जनसंख्या पर्दछ । शिक्षा र चेतनाको कमीले खोप लगाइएका शिशुको प्रतिशत पनि न्युन देखिनाले खोप कार्यक्रम पनि त्यति प्रभावकारी नभएको देखिन्छ । जिल्लाका स्वास्थ्य सम्बन्धी प्रमुख सूचकहरू तालिका

७.१५ मा दिइएको तथ्याङ्कबाट प्रष्ट हुन्छ .

तालिका ७.१५: स्वास्थ्य सम्बन्धी केहि सुचकहरु

| क्र.सं. | सूचक | इकाई | मान |
|---------|--|------------|-------|
| १ | सरदर जन्मान्तर | महिना | ३२ |
| २ | शिशु मृत्यु दर | प्रति हजार | ६१.५ |
| ३ | बाल मृत्यु दर | प्रति हजार | ९१ |
| ४ | मातृ मृत्यु दर | प्रति लाख | ५३९ |
| ५ | कोरा मृत्यु दर | प्रति हजार | ९.६२ |
| ६ | कुल प्रजनन दर | प्रति हजार | ४.१ |
| ७ | जनसंख्या प्रति डाक्टर | | ५१७४२ |
| ८ | जनसंख्या प्रति नर्स | | १००१४ |
| ९ | जनसंख्या प्रति हेल्थ असिस्टेन्ट | | १९४०३ |
| १० | जनसंख्या प्रति अ.हे.ब. | | ४३७३ |
| ११ | जनसंख्या प्रति बेड | | १२४२८ |
| १२ | तालीम प्राप्त स्वास्थ्यकर्मीको सहयोगमा जन्मेको शिशु | प्रतिशत | ११.७२ |
| | टिटानस टक्सोईडको २ मात्रा लिएको गर्भवति आमा | प्रतिशत | ३५.०६ |
| | परिवार नियोजनको साधन प्रयोग गर्ने परिवार (गर्भाधारण उमेर समूह) | प्रतिशत | ३७.६८ |
| | १ वर्ष मुनि सबै खोप पाएका शिशु | प्रतिशत | ७४.२० |

श्रोत : जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय, नुवाकोट ।

स्वास्थ्यकर्मी र जनताको अनुपात हेर्दा चिकित्सकीय सेवा सम्बन्धमा प्रति डाक्टर ५१७४२ जना प्रति नर्स १००१४ जना, प्रति हेल्थ असिस्टेन्ट १९४०३ जना र प्रति अ.हे.ब. ४३७३ जना रहेको पाइएको छ । त्यस्तै केवल ११.७ प्रतिशत बच्चा मात्र तालीम प्राप्त स्वास्थ्य कर्मीको सहायताले जन्मने गरेको देखिन्छ । त्यस्तै जिल्लामा कूल २५२ जन तालीम प्राप्त सुडेनी र ११२४ जना महिला स्वयम् सेविकाहरु रहेकोले ग्रामीण भेगका ९२.७ (२६७२७५) जनताले ती स्वास्थ्य कर्मीहरुको प्राथमिक सेवा पाउँछन् । प्रति सुडेनी ५७८ जना महिलाले सेवा पाएको देखिन्छ भने प्रति महिला स्वास्थ्य स्वयं सेविका अन्तर्गत २५७ जना महिला पर्दछन् ।

(ग) जिल्लाका प्रमुख रोगहरुको विवरण

जिल्लाका प्रमुख रोगका संक्रमणलाई विश्लेषण गर्दा विगतका वर्षहरुमा भन्दा हाल केही प्र कोपहरु बढ्दै आएको देखिन्छ । ०५८/५९ को तुलनामा सबैजसो रोगहरुको प्रकोप बढ्दै गएको देखिन्छ । बढ्दो जनसंख्या, अव्यवस्थित आवास, सुरक्षित खानेपानीको अभाव, सरकारी एवं निजी क्षेत्रका स्वास्थ्य कर्मीहरुको न्यून उपस्थिति, सरसफाई प्रति चेतनाको कमी र प्रदुषित वातावरण आदि यसका जिम्मेवार कारणहरु छन् । प्रायः असुरक्षित खाना र पानीबाट संक्रमित

हुने रोगहरुको मात्रा बढी देखिएका छन् । यस सम्बन्धी ४ वर्षको तुलनात्मक तथ्याङ्क तालिका ७.१६ मा दिइएको छ ।

तालिका ७.१६ : जिल्लाका प्रमुख रोगहरुको विवरण

| वर्ष | प्रमुख रोग | रोगीको संख्या | प्रतिशत |
|---------|--------------------------------|---------------|------------|
| २०५८/५९ | छालाको रोग | १२३२१ | १३.२९ |
| | स्वाश प्रश्वास | ७९५८ | ८.५८ |
| | भाडापखाला | ९३६८ | १०.१० |
| | जुकाको संक्रमण | ८७७६ | ९.४७ |
| | ग्याष्ट्रिक | ७०६२ | ७.६२ |
| | कारण थाहा नभएको ज्वरो | २६२२ | २.८२ |
| | रक्त अल्पता | ३२०७ | ३.४६ |
| | कानको संक्रमण | ४२४४ | ४.५७ |
| | आंखा सम्बन्धी रोग | ३९४० | ४.२५ |
| | भिटामिन र पोषण सम्बन्धी रोगहरु | १५९४ | १.७२ |
| | अन्य | ३१५७२ | ३४.०७ |
| | जम्मा | ९२६६४ | १०० |
| २०५९/६० | छालाको रोग | १३८७३ | १२.५४ |
| | स्वाश प्रश्वास | ९४१९ | ८.४५ |
| | भाडापखाला | १०८४४ | ९.७३ |
| | जुकाको संक्रमण | ११०९९ | ९.९६ |
| | ग्याष्ट्रिक | ८०६१ | ७.२३ |
| | कारण थाहा नभएको ज्वरो | ३९६४ | ३.५५ |
| | रक्त अल्पता | ३९५७ | ३.५५ |
| | कानको संक्रमण | ५०५४ | ४.५३ |
| | आंखा सम्बन्धी रोग | ५३२१ | ४.७७ |
| | भिटामिन र पोषण सम्बन्धी रोगहरु | १८३० | १.६४ |
| | अन्य | ३७९९९ | ३४.१० |
| | जम्मा | २९६७४९ | १०० |

| बर्ष | प्रमुख रोग | रोगीको संख्या | प्रतिशत |
|--------------------------------|--------------------------------|----------------|------------|
| २०६०/६१ | छालाको रोग | १६०८६ | १३.९२ |
| | स्वाश प्रश्वास | ९५७९ | ८.२९ |
| | भाडापखाला | १०४६८ | ९.०६ |
| | जुकाको संक्रमण | ८३०७ | ७.१९ |
| | ग्याष्ट्रिक | ८०९१ | ७ |
| | कारण थाहा नभएको ज्वरो | ४९४८ | ४.२८ |
| | रक्त अल्पता | ३६९९ | ३.२० |
| | कानको संक्रमण | ५५६३ | ४.८१ |
| | आंखा सम्बन्धी रोग | ६७१६ | ५.८१ |
| | भिटामिन र पोषण सम्बन्धी रोगहरु | २००७ | १.७३ |
| | अन्य | ४००६२ | ३४.६७ |
| | जम्मा | ७०९०२४ | १०० |
| | २०६१/६२ | छालाको रोग | १५९१८ |
| स्वाश प्रश्वास | | ९४८४ | ८.५९ |
| भाडापखाला | | ९८६४ | ८.९३ |
| जुकाको संक्रमण | | ७८२४ | ७.०९ |
| ग्याष्ट्रिक | | ८८५२ | ८.०२ |
| कारण थाहा नभएको ज्वरो | | ४९७७ | ४.५१ |
| रक्त अल्पता | | ३२७८ | २.९७ |
| कानको संक्रमण | | ५४७२ | ४.९५ |
| आंखा सम्बन्धी रोग | | ५५९४ | ५.०६ |
| भिटामिन र पोषण सम्बन्धी रोगहरु | | २३३६ | २.११ |
| अन्य | | ३६८४० | ३३.३८ |
| जम्मा | | १५२८४८७ | १०० |

श्रोत : २०५९ देखि २०६२ सम्मको वार्षिक प्रतिवेदन, स्वास्थ्य विभाग ।

तालिका अनुसार विगत ४ वर्षको रोग संक्रमणका प्रवृत्ति (trend) हेर्दा छालाको रोग सबभन्दा अधिक (१२.५४ प्रतिशत देखि १४.४२ प्रतिशत), त्यसपछि भाडापखाला (८.९३ प्रतिशत देखि १०.१० प्रतिशत) जुकाको संक्रमण (७.०९ प्रतिशत देखि ९.९६ प्रतिशत) र श्वास प्रश्वास (८.२९ प्रतिशत देखि ८.५९ प्रतिशत) देखिन्छ।

(घ) एच.आई.भि/एड्सको संक्रमण

जिल्लामा एच.आई.भि/एड्सको संक्रमणको स्थिति सम्बन्धमा एकिन तथ्याङ्क उपलब्ध छैन ता पनि यस्को खतरा बढ्दै गएको अनुमान गरिएको छ । सदरमुकामवाट दुर्गम भेगमा रहेका वेतिनी, घ्याडफेदी, गाँउखर्क र राउतवेँसी लगायतका केही गा.वि.स.हरुमा प्रयः तामाङ्ग र शेर्पा जातिका अधिकाश युवाहरु वर्षेनी रोजगारीका लागि भारतको मुम्बई लगायतका अन्य शहरमा काम गर्न जाने गर्दछन् । अशिक्षा र चेतनाको कमीले गर्दा धेरै जसो युवकहरु

एच.आइ.भी./एड्स वाट संक्रमित हुने गर्दछन् । त्यस्तै गाँउका युवतीहरु चेली वेटी बेच विखन दलालको प्रलोभनमा फसेर भारतको मुम्बई तथा अन्य शहरका वेश्या कोठीहरुमा बेचिन पुगेका छन् । जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालय र मेरी स्टोप्स सर्भिसेजले हाल सालै संयुक्त रुपमा संचालन गरेको सर्भेक्षण र जाँचवाट सो चार गा.वि.स.का १८ हजार जनसंख्या मध्ये करीब २५ प्रतिशतलाई एच.आइ.भि. पोजेटिभ रहेको जनाएको छ । एच.आइ.भि. पोजेटिभ भएर पनि कतिपयले अज्ञानताले गर्दा सामाजिक रुपमा तिरष्कृत हुने डरले बताउन नचाहने र कतिपयले स्थानीय स्तहमै क्षयरोगको औषधी सेवन गर्ने गरेका छन् । यस्तो स्थिति समयमै रोकथाम र नियन्त्रण गरिएन भने भविष्यमा विकराल रुप लिने देखिन्छ ।

(ङ) पोषणको स्थिति

राष्ट्रिय स्थितिको तुलनामा नुवाकोट जिल्लाको पोषणको स्थिति निम्न बमोजिम रहेको पाइन्छ । २०६१/६२ मा ३ वर्ष मुनिका संख्या कुपोषणले प्रभावित बालबालिकाको प्रतिशत २०५८/५९ को तुलनामा ७.५३ प्रतिशत विन्दुले घटी ७.५७ प्रतिशत रहेको छ ।

तालिका ७.१७ : पोषणको स्थिति (वागमति अञ्चलका अन्य जिल्लाहरूसंगको तुलनात्मक विवरण)

| आ.व. | काठमाण्डौ | नुवाकोट | धादिङ | सिन्धुपाल्चोक | रसुवा | राष्ट्रिय |
|---|-----------|---------|-------|---------------|-------|-----------|
| ३ वर्ष मुनिका बालबालिकाहरुको शारिरीक बृद्धि अनुगमन | | | | | | |
| २०५९/६० | १२८६१ | ८६१५ | १२४९७ | १२८१८ | २५०६ | १०५७७०८ |
| २०६०/६१ | १६७०३ | ११८०७ | १२५११ | १३२०४ | २१७३ | ११८३३७५ |
| २०६१/६२ | २३०५३ | ११०९१ | १४३२२ | १२३५९ | २४३९ | ११८६४५९ |
| कुपोषण भएका बालबालिकाहरुको अंश | | | | | | |
| २०५९/६० | १२.१ | १३.१९ | १६.९ | १८.८ | १८.८ | १४ |
| २०६०/६१ | ३.३ | ९.१९ | १६.९ | १६.३ | १६.३ | १२.१ |
| २०६१/६२ | १६.२ | ७.५७ | १०.८ | ११.७ | ११.७ | १०.५ |

श्रोत: जि.स्वा.का.

(च) परिवार नियोजन सम्बन्धी विवरण

नुवाकोट जिल्लामा परिवार नियोजनका साधनको प्रयोग दर २०५८/५९ को तुलनामा २०५९/६० र २०६०/६१ मा कम रहेको छ । २०६०/६१ मा परिवार नियोजनको साधनको प्रयोग दर ३७.०४ प्रतिशत रहेको छ । राष्ट्रिय स्तरमा यो दर ४०.२ प्रतिशत छ ।

चेतनाको कमी, यौन शिक्षाको अभाव, ग्रामीण भेगमा शिक्षाको प्रभाव पर्न नसक्नु, रुढिवादी परम्परा, अन्धविश्वास, गरिबी, बेरोजगारी, छोराको चाहना, महिलाहरुमा लजालुपना आदि कारणहरुले गर्दा यस जिल्लामा परिवार नियोजनको साधन प्रयोगको दर कम रहेको छ ।

अर्कोतर्फ गाउँघरमा घुम्ती शिविरहरु केवल स्थायी बन्ध्याकरणका लागि मात्र सञ्चालन गर्ने गरिन्छ । ग्रामीण भेगका मा.सि.का. हरूलाई अभि सक्रिय परिचालन गराउन सकेमा यो दर बढ्दै जाने देखिन्छ । साथै यस क्षेत्रमा उत्कृष्ट ग्रा.स्वा.का. तथा मा.सि.का. एवं अ.हे.व. लाई पुरस्कृत गर्ने प्रथालाई निरन्तरता दिन सकेमा चेतना जागरणको स्तर बढ्न जाने र परिवार नियोजनका साधन प्रयोग गर्ने संख्या बढ्न गई अन्तत्वोगत्वा राष्ट्रिय जनसंख्या वृद्धिदरमा नै कमी ल्याउन सहायक शिद्ध हुने देखिन्छ । तालिका ७.१८ मा दिइएको तथ्याङ्कले अस्थायी साधनको प्रयोगदर बढि लोकप्रिय हुँदै गएको देखिन्छ ।

तालिका ७.१८ : परिवार नियोजन सम्बन्धी तुलनात्मक विवरण

(वागमति अञ्चलका अन्य जिल्लाहरूसंगको तुलनात्मक विवरण)

| आ.व. | नुवाकोट | धादिङ | सिन्धुपाल्चोक | रसुवा | काठमाण्डौ | राष्ट्रिय |
|--|---------|-------|---------------|-------|-----------|-----------|
| परिवार नियोजनका साधनका प्रयोग दर (CRP) | | | | | | |
| ०५९/६० | ३५.१२ | २५.९६ | ३५.७० | ३८.४९ | ७१.११ | ३७.८० |
| ०६०/६१ | २६.२३ | २९.०८ | ४२.८४ | ४१.०३ | ५२.३६ | ४०.०२ |
| ०६१/६२ | ३९.१७ | ३१.५३ | ३९.२० | ४२.४० | ५१.१० | ४१.०३ |
| कुल बन्ध्याकरण (मिनील्याप, ल्याप्रोस्कोपी र भ्याक्सेटोमी) | | | | | | |
| ०५९/६० | ११७२८ | ८१४२ | ९३३१ | २०५४ | ४७२०५ | १०२०३२८ |
| ०६०/६१ | १२०५३ | ८६५३ | ९२४८ | २१४८ | ४८४२४ | १०७२६९८ |
| ०६१/६२ | १२२७७ | ९१३६ | ९६८५ | २२३३ | ४९४५८ | ११२६८४६ |
| कुल बन्ध्याकरण मध्ये महिलाको अंश | | | | | | |
| ०५९/६० | ४६.०२ | १६.०१ | २२.५३ | १८.४० | ६७.७६ | ६८.८३ |
| ०६०/६१ | ४६.३१ | १५.७१ | २२.१७ | १९.६० | ६६.८२ | ६९.७१ |
| ०६१/६२ | ४६.४९ | १४.७६ | २१.९४ | २०.५१ | ६६.०३ | ७०.५१ |
| परिवार नियोजनका अस्थायी साधन प्रयोगकर्ताहरुको संख्या (कण्डम, खाने चक्कि, डिपोप्रोभेरा, आईयुडि, र नरप्लाण्ट) | | | | | | |
| ०५९/६० | ९३८२ | १००१३ | १२८८२ | १३८४ | ८६१८२ | ७८६७९६ |
| ०६०/६१ | २८९४ | ११३९९ | १६३९० | १३८१ | ७७२७६ | ८१४७४४ |
| ०६१/६२ | १०५६८ | १३०६० | १४५८२ | १५२५ | ७६८८४ | ८५३११२ |
| कुल परिवार नियोजन (अस्थायी र बन्ध्याकरण) | | | | | | |
| ०५९/६० | २१११० | १८१५५ | २२२१३ | ३४३८ | १३३३०७ | १८०७१२ |
| ०६०/६१ | १४९४७ | २००५२ | २२९३८ | ३५२९ | १२५७०० | १८८७४४ |
| ०६१/६२ | २२८४५ | २२१९६ | २४२६७ | ३७५८ | १२६३४२ | १९७९९५८ |

श्रोत: २०५९ देखि २०६२ सम्मको वार्षिक प्रतिवेदन, स्वास्थ्य सेवा विभाग ।

(छ) खोपको विवरण

जिल्लामा विभिन्न रोग प्रतिरोधक खोप लिने वालवालिका सरदर ७८.२९ प्रतिशत रहेको छ भने गर्भवति महिलाहरूले टी.टी. भ्याक्सिन लिने प्रतिशत भने एकदम कम अर्थात ३५ प्रतिशत मात्र देखिन्छ ।

तालिका ७.१९ : खोपहरु सम्बन्धी नुवाकोट जिल्लाको तथ्याङ्कीय भलक

| खोपको विवरण | लगाउनु पर्ने संख्या | लगाएको संख्या | आ.व. ०६१/६२ को स्थिति प्रतिशत |
|--------------------------------------|---------------------|---------------|------------------------------------|
| बि.सी.जी | ९७४३ | ७६२८ | ७८.२९ |
| डि.पी.टी., तेस्रो | ९७४३ | ७२३० | ७४.२० |
| पोलीयो, तेस्रो | ९७४३ | ७४२८ | ७६.२३ |
| दादुरा | ९७४३ | ६६८३ | ६८.५९ |
| टि.टि. (गर्भवति महिला) दोश्रो मात्रा | १०६४६ | ३७३३ | ३५.०६ |
| हेपाटाइटिस वि खोप तेस्रो मात्रा | ९७४३ | | कार्यक्रम ०६२ जेष्ठ देखि शुरु भएको |

श्रोत: नुवाकोट जिल्लाको तथ्याङ्किइ भलक ।

जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालयले खोपको सेवा पुऱ्याउनकालागि सम्बन्धित खोप केन्द्र सम्म ईलाका स्वास्थ्य चौकी हुदै हे.पो. र सव हे.पो.मा कोल्ड चेनको व्यवस्था गरि भ्याक्सिन पठाउने कार्य गर्दै आएको छ । जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालयले खोप सुपरिवेक्षकको व्यवस्था गरेतापनि प्रभावकारी सुपरिवेक्षण, अनुगमन तथा मुल्याङ्कन भएको देखिदैन । हाल कतिपय स्थानमा आफ्नै श्रोतले पनि त्यस्ता कार्यक्रम संचालन गर्ने प्रयासहरु भईराखेका छन् । जिल्लामा हाल संचालित गाउँघर क्लिनिकले सेवाको व्यापकतामा जोड दिएको छ । जिल्लामा रक्त संचार सेवा, सव वाहन सेवा को व्यवस्था का साथै मौजुदा भैतिक सुविधामा थप सुविधा हुनुपर्ने आम गुनासो रहेको पाइन्छ । हाल जिल्लामा ४ वटा एम्बुलेन्सले विरामी ओसार पसार सेवा पुऱ्याइरहेका छन् । प्रति एम्बुलेन्सले ७२१२० जनालाई सेवा पुऱ्याइरहेको छ ।

७.२.२ स्वास्थ्य क्षेत्रका समस्या र सवालहरु

जिल्लामा जिल्ला अस्पताल तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र गरी ५ जना चिकित्सकको दरबन्दी रहेको भएतापनि पदपूर्ति पुरा हुन नसक्नु, लामो समय सम्म चिकित्सक अनुपस्थिति रहनु, आदि कारणले जिल्ला वासीले आकस्मिक चिकित्सा सेवा प्राप्त गर्न नसकी साधारण स्वास्थ्य कर्मीको

सेवा लिन वा काठमाण्डौ धाउन वाध्य भएका छन् । अन्य स्वास्थ्य कर्मीको पनि दरबन्दी अनुसार पदपूर्ति नहुनाले जनशक्तिको अभाव रहेको प्रष्ट हुन्छ ।

१. कतिपय स्थानमा स्वास्थ्य चौकीको भवन निर्माण वा मर्मत नहुनाले जनतालाई स्वास्थ्य सेवा पुऱ्याउन तथा प्राप्त औषधीको सुरक्षित संचय गर्न समस्या परेको पाइएको छ ।
२. सरकारबाट प्राप्त औषधीमात्र पर्याप्त नहुने र धेरै औषधी स्थानीय निकाय र संस्था आफ्नै आम्दानीबाट खरिद गर्नु पर्ने हुँदा आम्दानीले स्वास्थ्य संस्थाको भौतिक विकास लागि खर्च गर्न सक्ने स्थिति रहेको देखिँदैन ।
३. गुणस्तरीय स्वास्थ्य सेवा तथा उपचारात्मक सेवा नितान्त प्राविधिक विषय भएकोले त्यस्ता स्वास्थ्य कर्मीलाई समय समयमा उच्च तह एवं पुनर्ताजगी तालीम हुनु पर्नेमा सो पर्याप्त मात्रामा उपलब्ध हुन सकेको देखिँदैन ।
४. जिल्लामा आयुर्वेद अस्पताल तथा औषधालय समेत स्थापना भएको भएतापनि तिनको अवस्था रुग्ण हुन गएको छ ।
५. जिल्लामा रक्त संचार केन्द्र नहुनाले आकस्मिक सेवा काठमाण्डौबाट आपूर्ति गर्नु पर्ने वा काठमाण्डौ नै जानुपर्ने वाध्यता रहेको छ । यसले गर्दा विरामीको ज्यान नै खतरामा पर्ने स्थिति रहेको छ ।
६. प्रत्येक गा.वि.स.मा उपस्वास्थ्य चौकीको व्यवस्था गरिएको भएतापनि ठूलो क्षेत्र रहेको विकट गा.वि.स.हरुमा विरामी उपस्वास्थ्य चौकी ल्याउंदा ल्याउंदै बाटैमा अकाल मृत्यु भोग्न वाध्य छन् । त्यसैले ठूलो क्षेत्र ओगटेका दुर्गम गा.वि.स.हरुमा एक भन्दा बढी उपस्वास्थ्य चौकीको स्थापनाको गर्नु पर्ने देखिन्छ ।
७. जिल्लामा औषधि व्यवस्थापन (Drug Scheme) कार्यक्रमलाई जिल्लाभर विस्तार नभएकाले सबैभेगका जनतालाई लाभ पुग्न सकेको छैन ।
८. जिल्ला अस्पतालको राम्रो व्यवस्थापन र आवश्यक साधन श्रोत उपलब्धता तथा महामारी रोगको नियन्त्रण र निदानका लागि छुट्टै आवश्यक व्यवस्था हुन सकेको छैन ।
९. जिल्लामा एच.आई.भि./एड्सको संक्रमण बढ्दै जाने खतरा रहेको तर यस्को नियन्त्रण र रोकथामको प्रभावकारी व्यवस्था हुन सकेको छैन ।

७.२.३ स्वास्थ्य क्षेत्रका सम्भावनाहरु:

१. दातृसंस्था तथा अन्तर्राष्ट्रिय गैर सरकारी संस्थाको सहयोगमा साधन श्रोत परिचालन गरि जिल्लाका स्वास्थ्य संस्थाहरुबाट संचालित कार्यक्रम तथा स्थापित स्वास्थ्य संस्थाको दीगो व्यवस्थापन गर्न सकेमा स्वास्थ्य क्षेत्रमा महत्वपूर्ण सेवा पुऱ्याउन सकिने देखिन्छ ।
२. जडिबुटिले धनी रसुवा छिमेकी जिल्ला भएकोले नुवाकोट जिल्लामा आयुर्वेदिक औषधालयको विकास र विस्तार गर्न सकिने प्रबल संभावना रहेको छ ।
३. जिल्लामा हाल स्थापित औषधि बैंकको राम्रो व्यवस्थापन र दीगो संचालन गर्न सकेमा गरिब र विपन्न वर्गले पनि स्वास्थ्य सेवाबाट वञ्चित हुनु पर्ने छैन ।
४. जिल्लामा नेपाल रेडक्रस सोसाइटीमा रहेको एक मात्र आँखा केन्द्र तथा एक मात्र दन्त अस्पताललाई साधन र जनशक्ति सम्पन्न गराउन सकेमा जिल्लाबासीले सेवा लिन काठमाण्डौ जानु नपर्ने हुन्छ ।

७.३ खेलकूद तथा क्रिडास्थल

मानव जीवन केवल खाद्यान्न, वास र कपडाले मात्र स्वस्थ हुन नसक्ने र शारिरीक स्वस्थता मात्रै सम्पूर्ण जीवनको स्वस्थता पनि नहुने हुंदा स्वास्थ्यको एक महत्वपूर्ण पक्ष मानसिक स्वास्थ्य पनि हो । मानिस तब स्वस्थ हुन्छ जब उ शारिरीक र मानसिक दुवै रूपले स्वस्थ रहन्छ । त्यसैले मानसिक रूपले स्वस्थ रहनकालागि उसलाई मनोरञ्जन र मनोरञ्जनकालागि खुला ठाउँको आवश्यकता रहन्छ । विश्व खाद्य संगठन ले निर्धारण गरेको मापदण्ड अनुसार प्रत्येक एक हजार जनसंख्याको वस्ति बीचमा आधाहेक्टर जमिन मनोरञ्जनकालागि हुनु पर्दछ । ग्रामीण स्तरमा यस्तो जमिनको प्राचुर्यता रहेतापनि घना आवादीका शहर वजारमा यो प्राप्त गर्न गाह्रो पर्न सक्छ । नुवाकोट जिल्ला ग्रामीण भेकमा पर्ने हुदा यस्तो जमिन भने प्रशस्त छन् । तर खेल, मनोरञ्जनका लागि व्यवस्थित भूमिको भने यस जिल्लामा पनि अभाव नै छ । सार्वजनिक रूपमा पार्कहरु पनि त्यति धेरै निर्माण भएको छैन । यसैले समयमै वालउद्यान, मनोरञ्जन स्थल, क्रिडास्थल, खेल मैदान आदिमा ध्यान दिनु पर्ने हुन्छ । जिल्लामा फुटबल र भलिबल वाहेक अन्य खेलको विस्तार भईसकेको छैन । नुवाकोट बहुमुखी क्याम्पस परिसरमा रहेको फुटबल, भलिबल मैदान, त्रि.त्रि.उ.मा.वि. छेउ अवस्थित खेलमैदान सदरमुकाम नजिकका खेल मैदानहरु हुन् । त्यस्तै जिल्लाका प्रत्येक जसो मा.वि./उ.मा.वि. हरूमा ठूलो या सानो नै भएपनि खेल मैदान हुने गरेको छ । खेलकूदका लागि जिल्ला खेलकूल परिषदले जिल्ला सदरमुकाममा केही सक्रिय देखाएतापनि ग्रामीण भेगमा कमै मात्र सक्रियता रहेको देखिन्छ ।

मनोरञ्जनका अन्य साधनहरु मा चलचित्र पनि पर्दछन् । जिल्लामा हाल २ वटा हलहरु दर्ता भै सञ्चालन भइरहेका छन् भने अन्य साना हाइभिजन हलहरु पनि कतै कतै संचालन भई राखेको छ । एक अर्को हलको पनि निर्माण कार्य पुरा हुदैछ । यस सम्बन्धी विस्तृत विवरण लागि तालिका ७.२० मा दिइएको छ ।

तालिका ७.२० :चलचित्र मन्दिर र सीट क्षमता

| क्र.सं. | चलचित्र मन्दिरको नाम | स्थान | सिट क्षमता |
|---------|-----------------------|------------------|------------|
| १ | वनदेवी चलचित्र मन्दिर | वि.न.पा. ३, वटार | ३५० |
| २ | जगदम्बा चित्र मन्दिर | वि.न.पा. ४, वटार | ४४२ |

श्रोत: जिल्ला विकास समितिको कार्यालय, विदुर ।

७.३.१ समस्या तथा सवालहरु

१. खेलकूल र मनोरञ्जन मानवजीवनको अत्यावश्यक गतिविधिहरु हुन् भन्ने सोचको विकास स्थानीय निकायमा अभै सम्म भएको पाइदैन । तैपनि प्रतिष्ठा र इज्जतका लागि स्थानीय निकायले स्थानीय क्लवहरुलाई पटके निर्णय गराई खेलकूदमा संलग्नता देखाएको मात्र पाइन्छ । तर खेलकूदको दीर्घकालीन विकासको कार्यक्रम बनेको देखिदैन ।
२. सार्वजनिक जग्गा अधिग्रहण गर्ने, खेती गर्ने, वस्ती बसाउने आदि कार्य वढ्दै गएकोले भविष्यमा यस्ता जग्गा जमिन पाउन गाह्रो पर्न जानेछ । त्यसैले त्यस्ता क्षेत्रहरुको संरक्षण र संवर्द्धन गर्नु जरुरी देखिन्छ ।

३. टि.भी., रेडियो, चलचित्रहरूले गर्दा खेलकूद र शारिरीक व्यायाम तिर युवा वर्गको ध्यान त्यति जान सकेको पाइदैन । खेल क्षेत्रको दुरावस्थाले पनि उनीहरूलाई वितृष्णा जागेको हुनु पर्दछ ।

७.३.२ सम्भावना तथा अवसरहरू

१. कतिपय गा.वि.स.हरूमा खुला सार्वजनीक स्थानहरू हाल पनि त्यतिकै रहेको पाइएकोले त्यस्ता जग्गा जमिनलाई क्रिडास्थल तथा मनोरञ्जन स्थलका रूपमा उपयोग गरी लाभ लिन सकिन्छ । जिल्लाले खेलकूद क्षेत्रमा ख्याती कमाइसकेको हुनाले त्यस ख्यातीलाई जोगाइराख्नका लागि त्यस्ता राष्ट्रिय/अन्तर्राष्ट्रिय ख्यातीप्राप्त व्यक्तिलाई खेलकूदको विकास विस्तार र संवर्द्धनमा जोड दिन लगाउनाले र उनीहरूकै सहयोगमा जिल्लामा खेलकूद विकासमा संलग्न गराउन सकेमा अनुकराणात्मक प्रभाव पर्न गई जिल्लाको प्रतिष्ठा अभै उत्कृष्ट हुन सक्नेछ ।
२. देशको नै ऐतिहासिक स्मारकको रूपमा रहेको नुवाकोट दरबार क्षेत्रलाई पर्यटकीय स्थलको रूपमा विकास गरी यस नजिक र दरबार तथा मन्दिर परिसरमा नमुना उद्यान/पार्क निर्माण गरी विश्व सम्पदा सुचीमा राख्न तथा संग्रहालयका रूपमा विकास गरि मनोरञ्जनका लागि उपयुक्त स्थान बनाउनका लागि पहल गरेमा यस क्षेत्रको विकास हुने देखिन्छ ।

७.४ समाज कल्याण

समाज भनेको विभिन्न अवस्थामा रहेका मानिसहरूको सामुहिक जमघट हो र देश विकास त्यस्ता समाजका सम्पूर्ण पक्षहरूको विकासमा निर्भर गर्दछ । त्यसैले जिल्लाका सम्पूर्ण गा.वि.स.हरूमा अपाङ्ग सुस्त मनस्थिति, वहिरा आदि अशक्त वर्गहरू हुन सक्दछन् र तिनीहरूको लागि कल्याणकारी कार्यक्रम सञ्चालन गर्नु आवश्यक हुन्छ । त्यसकालागि तथ्याङ्कको जरुरत पर्दछ । सरकारले जि.वि.स. मार्फत सामाजिक सुरक्षा स्वरूप ७५ वर्ष नाघेका ज्येष्ठ नागरिक एवं ६० वर्ष नाघेका असहाय, विधवा तथा शारिरीक रूपमा अशक्त भई अपाङ्ग भएका व्यक्तिहरूलाई मासिक भत्ता वितरण गर्दै आइरहेको छ । जि.वि.स. नुवाकोटका अनुसार यस्ता अशक्तहरूको विवरण तालिका ७.२१ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

तालिका ७.२१ : ज्येष्ठ नागरीक, असहाय विधवा र अशक्त सम्बन्धी विवरण

| विवरण | ज्येष्ठ नागरीक | असहाय/विधवा | अशक्त | जम्मा |
|-------|----------------|-------------|-------|-------|
| पुरुष | १८४७ | - | ३३ | १८८० |
| महिला | १८३९ | ३५७७ | १७ | ५४३३ |
| जम्मा | ३६८६ | ३५७७ | ५० | ७३१३ |

श्रोत : जि.वि.स.को प्रगति पुस्तिका ।

यस्ता वर्गहरूका लागि लक्षित कार्यक्रमहरूको खांचो जिल्लामा अभै बढ्दै गएको छ । जिल्लामा राष्ट्रिय वहिरा संघ जिल्ला कार्य समितिले कार्य गरिरहेको भएतापनि यस्ता अन्धा, अपाङ्ग, अनाथ

र अशक्तहरुको व्यवस्था गर्नका लागि अनाथालय र अन्धा अपाङ्ग कल्याण संघ जस्ता संस्थाहरु खोलिएको पाइदैन । शुस्त मनस्थितिका लागि ४ वटा विद्यालयमा ७ वटा शुस्त मनस्थिति (बहिरा र अन्धा) विशेष शिक्षाको व्यवस्था भएको छ र वालमन्दिरले असहाय बालबालिकाहरुका लागि बाल कल्याण र बाल हकहितका कार्य गर्दै आएको देखिन्छ ।

तालिका ७.२२: विशेष आवश्यकता शिक्षा सम्बन्धि विवरण

| क्र.सं. | विशेष शिक्षा संचालन भएका विद्यालयहरु | किसिम | कक्षागत विद्यार्थी संख्या | | |
|---------|--------------------------------------|----------------|---------------------------|-------|-------|
| | | | छात्रा | छात्र | जम्मा |
| १ | श्री भैरवी मा.वि., नुवाकोट | सुस्त श्रवण | २ | ७ | ९ |
| २ | श्री चण्डेश्वरी उ.मा.वि., तुप्चे | दृष्टिविहीन | २ | ८ | १० |
| ३ | श्री बागेश्वरी मा.वि., चोकदे | सुस्त श्रवण | ३ | ८ | ११ |
| ४ | श्री बागेश्वरी मा.वि., चोकदे | स'स्त श्रवण | ६ | ४ | १० |
| ५ | श्री चण्डेश्वरी उ.मा.वि., तुप्चे | दृष्टिविहीन | ४ | ५ | ९ |
| ६ | श्री भैरवी मा.वि., नुवाकोट | सुस्तश्रवण | ५ | ६ | ११ |
| ७ | श्री रणभुवनेश्वरी उ.मा.वि., देवीघाट | सुस्त:मनस्थिति | ५ | ५ | १० |

श्रोत: जिल्ला शिक्षा कार्यालय, नुवाकोट ।

जिल्लामा व्यक्तिगत घटना दर्ता गर्ने प्रवृत्ति ज्यादै कम छ । जन्म, मृत्यु, बसाई सराई, विवाह र सम्बन्ध विच्छेद जस्ता घटना दर्ता हुदाँ सुविधा सम्पूर्ण गा.वि.स.मा उपलब्ध हुँदा पनि यस किसिमको कृयाकलाप नगण्य नै छ । यसले गर्दा विभिन्न कार्यक्रम तर्जुमा गर्दा सतही रुपलिने र लक्षित वर्गलाई फाइदा पुगनुको सट्टा हुने खानेवर्गलाई नै फाइदा पुग्न गएको स्थितिहरु छ ।

तालिका ७.२३ : व्यक्तिगत घटना दर्ता सम्बन्धी विवरण

| बर्ष | जन्म | मृत्यु | विवाह | बसाईसराई | सम्बन्ध विच्छेद |
|------|-------|--------|-------|----------|-----------------|
| २०५५ | २२८७ | ५५५ | ७८० | १४४ | २ |
| २०५६ | १३०७ | ७३४ | ८१२ | १८३ | ० |
| २०५७ | १२९०२ | ५९८ | १०८९ | २३३ | ११ |
| २०५८ | ६८९० | ५७९ | ९५५ | १८९ | - |
| २०५९ | ६९२८ | ५८१ | ९४४ | १८४ | - |
| २०६० | १०१७६ | १०५९ | १६४३ | ४२४ | - |
| २०६१ | ९६७९ | १०८८ | १६४७ | ३६८ | ३ |

श्रोत: जि.वि.स. नुवाकोट

७.४.१ विद्यमान समस्या र सवालहरु

१. जिल्लामा अपाङ्गहरुको संख्या धेरै भएतापनि ५० जनाको कोटा निश्चित गरेर मात्र सरकारद्वारा सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रमको रकम प्राप्त हुने भएकोले धेरै अपाङ्गहरु सामाजिक सुरक्षाबाट वञ्चित हुनुपरेको तथ्य रहेको छ ।
२. गा.वि.स. हरूमा भएका धेरै जेष्ठ नागरिक र असहाय, विधवालाई पुग्ने पर्याप्त रकम सरकारबाट प्राप्त भई उक्त रकम दामासाहीले बाँडनु पर्दा उक्त रकम छरिन गई ठोस उपलब्धि विहिन हुन जाने गरेको छ ।
३. व्यक्तिगत घटना दर्ता नहुने हुदा योजना तर्जुमामा उक्त तथ्याङ्क प्रयोग गर्न नसकिने र लक्षित वर्गमा भन्दा अन्यत्र नै योजनाको प्रभाव पर्न जाने र त्यस्ता आयोजनाको दिगोपनामा समेत संकट पर्न जाने सम्भावना रहन्छ ।
४. असहायको परिभाषा स्पष्ट हुन नसक्नाले त्यस्तो सामाजिक सुरक्षा बाँडफाँड सम्बन्धमा कठिनाई परिरहेको छ ।
५. अन्धा, अपाङ्ग पुनर्स्थापना केन्द्र तथा जेष्ठ नागरिक, असहाय वृद्धहरुका लागि एक वृद्धाश्रमको व्यवस्था नहुनाले पनि वृद्धहरुलाई अप्ठ्यारो परिरहेको छ ।
६. सामाजिक सुरक्षा लक्षित वर्गमा पुऱ्याउन राजनैतिक दबाव, भुठ्ठा वयान आदि आउनुका साथै घरदैलो वितरण कार्यक्रम प्रभावकारी रूपमा संचालन हुन नसक्दा आश्रित परिवार का अन्य सदस्यले खाइदिने गरेको पनि पाइयो । त्यसैले यस कार्यलाई दुरुत्साहित गर्न फोटोसहितको पढाको व्यवस्था गर्ने आदि सुधारात्मक उपाय अपनाउनु पर्ने हुन्छ ।

घरेलु हिंसा/उत्पिडन र विधवा परित्यक्त महिला तथा वेचिएर फर्किएका महिलाहरुको सुरक्षाको लागि सुधार गृह, पुनर्स्थापना केन्द्र, राहत, गृह, आदिको व्यवस्था यस जिल्लामा भएको देखिदैन ।

७.५ रक्षात्मक सेवा

आगलागी नियन्त्रणका लागि हालै विदुर न.पा.ले १ वटा दमकलको व्यवस्था गरेको छ भने आगलागी, बाढी पहिरोका पिडितहरुकालागि उद्धार कार्यमा नेपाल प्रहरी, नेपाली सेना, नेपाल रेडक्रस सोसाइटी आदि संघ/संस्थाहरु जुट्ने गरेको पाइएको छ भने आर्थिक क्षेत्रमा उद्धारकालागि जिल्ला दैवीप्रकोप उद्धार समन्वय समिति गठन गरिएको छ । त्यस समिति बाहेक जिल्ला प्रशासन तथा जि.वि.स.ले पनि राहतका रूपमा नगद सहयोग र नेपाल रेडक्रस सोसाइटीले जिन्सी सामानको समेत सहयोग गर्ने गरेको छ । वि.न.पा. द्वारा हालै एक शववाहनको व्यवस्था भएको छ भने जि.वि.स. जित कार्यक्रमले चेलीवेटी राहतगृह तथा महिला/वाल वालिका आगमन सूचना केन्द्रको स्थापना गरेको छ । जिल्लामा वेलावखतमा कुनै सरुवा रोगको महामारी आइपरेको खण्डमा जिल्ला स्वास्थ्य कार्यालयले शिविरहरु संचालन गरि सेवा गर्ने, आफ्ना स्वास्थ्यकर्मी नपुग देखिएमा सम्बन्धीत निकायबाट थप सहयोग माग गरि टोली मार्फत सहयोग गर्ने गरिएका छ । आकस्मिक विरामी ओसार्नकालागि जिल्लाका ४ वटा एम्बुलेन्सहरुले सेवा पुऱ्याइरहेका छन् ।

७.५.१ विद्यमान समस्या र सवालहरु

१. जिल्लामा उपलब्ध एक मात्र दमकल पनि हाल सम्म उचित उपयोगमा आउन सकेको छैन । एक त ग्रामीण भेगमा आफै वा सामुदायिक मिलेमतोमा आगलागी नियन्त्रण गर्ने गर्दछन् भने अर्कोतर्फ ग्रामीण भेगमा सडक हुँदैन र भएपनि सांघुरो र दमकल नजाने किसिमको हुनाले उक्त सुविधा लिन गाह्रो भएको छ ।
२. जिल्लामा रक्त संचार केन्द्र नभएकाले आकस्मिक उपचारको लागि काठमाण्डौ उपत्यकानै जानु पर्ने समस्या अझै विद्यमान छ ।
३. आगलागी र बाढीपहिरो जस्ता दैवी प्रकोपका लागि दैवी प्रकोप उद्धार समिति, जि.वि.स.को श्रोत कम भएकोले उक्त उद्धार नपुग देखिएकोले सरकारले यस्तो कोषको पर्याप्त व्यवस्था नगरिदिदा त्यस्ता पिडितलाई प्रभावकारी रूपमा सहयोग पुऱ्याउन सकिएको छैन ।

७.६ महिला तथा बालबालिकाको स्थिति

देश निर्माणको आधा योगदान रहने महिला वर्गहरुको यस जिल्लाको स्थिति देशको स्थिति भन्दा धेरै फरक छैन । अधिराज्यभरिका महिला सशक्तिकरणको क्षेत्रमा नुवाकोट ३८ औं स्थानको जिल्लामा पर्दछ । जिल्लामा आधा भन्दा बढी जनसंख्या रहेको महिला आज पनि शिक्षा, स्वास्थ्य आदिका क्षेत्रमा पछाडि परेका छन् । यसैले जिल्लामा महिला हक हित संरक्षण, सशक्तिकरण र विकासकालागि महिला विकासका कार्यक्रमहरु संचालन गरिनु आवश्यक छ । त्यस्तै बालबालिकाको स्थिति पनि सुदृढ देखिँदैन । कूल जनसंख्याका ६४.६ प्रतिशत अर्थात १८६४१४ जना बालबालिका (०-१५ वर्ष मुनी उमेरका) समूह मा पर्दछन् । यो समूह वर्तमानमा अनुत्पादक जनशक्ति भएकोले यिनीहरुको भार अन्य उत्पादनशील जनशक्तिमा पर्दछ । भविष्यमा भने यिनीहरुले विकास निर्माणमा महत्वपूर्ण योगदान दिनसक्ने हुदा यिनीहरुको विकासमा ध्यान दिनु जरुरी छ । सबैलाई शिक्षा, बाल विकास गृह, बाल अधिकारको प्रत्याभुति, बालबालिका विकासमा लक्षित कार्यक्रमहरु संचालन गर्नु जरुरी छ ।

सरकारले महिला शसक्तिकरणको लक्ष्य लिएर संचालन गरेको महिला विकास कार्यक्रमले जिल्लामा सकारात्मक प्रभाव पार्न सकेको संकेत मिलेको छ । जिल्लामा २०५७ मा मात्र स्थापित महिला विकास शाखाले हाल २७ गा.वि.स.मा कार्यक्रम संचालन गरिरहेको छ । जिल्लामा महिला विकास सम्बन्धी विवरण तालिका ७.२४ मा दिइएको छ ।

तालिका ७.२४ : महिला विकास कार्यक्रमको संक्षिप्त भलक

| क्र.सं. | कार्यालयको स्थापना | १४ वटा |
|---------|-----------------------------------|--------|
| १. | कार्यक्रम संचालन भएका गा.वि.स.हरु | १६ वटा |
| २. | हालसम्म गठन गरिएको समुह संख्या | ६१३ |
| ३. | समूहमा आवद्ध सदस्य संख्या | ४४०३ |
| ४. | चालु कोष समिति गठन | ८ |
| ५. | सामुदायिक विकास समिति | ६३ |

| | | |
|--|--|----------------------------------|
| ६. | हालसम्म गरिएको ऋण लगानी | छैन(बैकले ऋण दिएको छैन) |
| ७. | समूह बचत रकम | ८३,८६,६२८ |
| ८. | बचत रकमबाट लगानी रू. | ८२,४९,६२८ |
| ९. | लगानी सदस्य संख्या | २९३७ जना |
| १०. | बचत लगानी क्षेत्र | कृषि, स्वास्थ्य(उपचार खर्च) |
| ११. | सेवा | पसल राख्न |
| १२. | उद्योग | छैन |
| | | |
| | | |
| महिला विकास शाखाबाट गरिने क्रियाकलापहरु | | |
| १. | वालवालिकाको समुह गठन | ७८ |
| २. | सदस्य संख्या | - |
| ३. | आय आर्जन कार्यक्रम | कृषि, पशुपालन |
| ४. | सामुदायिक विकास कार्यक्रम | चौतार निर्माण, जाड/तास नियन्त्रण |
| ५. | तालिम | |
| ६. | वातावरण संरक्षण सम्बन्धी कार्यक्रम | |
| ७. | संस्थागत विकास कार्यक्रम | ११ संस्था दर्ता |
| ८. | महिला विकास जागृती तथा आय आर्जन कार्यक्रम | १४ गा.वि.स.मा गरिएको |
| ९. | वाल विकास कार्यक्रम | |
| १०. | चेलीवेटी बेचबिखन तथा देहव्यापार सम्बन्धी कार्यक्रम | प्रभावित क्षेत्रमा |

(बाँकी रकम बैकमा मौजाद रहेको)

७.६.१ शैक्षिक स्थिति

राष्ट्रिय जनगणना २०५८ ले देखाएको महिला तथा वालवालिकाको स्थितिले केहि सोच्नु पर्ने स्थितिको सूचना दिएको छ । कुल जनसंख्याको साक्षरता दर ५९ प्रतिशत भएकोमा महिलाहरुको साक्षरता दर भने ४० प्रतिशत मात्र रहेको छ । त्यस्तै वालवालिकाको शैक्षिक स्थिति पनि मजबुत नरहेको तथ्य रहेको छ ।

शिक्षाको प्रचार प्रसार र आवश्यकताका विषयमा जति चेतना दिलाइएतापनि अझै सम्म विद्यालय जाने उमेरका सवै वालवालिकाहरु विद्यालय जान सकेको छैन । प्राथमिक विद्यालय स्तरमा हाल छात्राहरुको लागि तेल वितरण गर्ने कार्यले गर्दा भर्नादर केही बढेको भएतापनि प्राथमिक स्तरबाट माथि छोरा भन्दा छोरीको विद्यालय जाने क्रम घटेको छ भने विद्यालय बीचमा छाडने प्रवृत्ति बढि रहेको छ । घरधन्दा गर्नु पर्ने, भाइवहिनीको हेरालो बस्नुपर्ने, गाईवस्तु चराउनु पर्ने, मेलापात पर्व, मजदुरी गर्नु पर्ने अभिभाराका अलावा कलिलै उमेरमा विवाह गरिदिने प्रचनले वालिकाहरु शिक्षामा अझ पछाडि परेका छन् ।

त्यस्तै समाजमा व्याप्त रुढिवादी, छिट्टै विवाह गरिदिने र विवाह पश्चात पढ्न नहुने मान्यता, सानै उमेरमा घर व्यवहारको बोझ धान्नु पर्ने, रोजगारीमा अवसर प्राप्त गर्न नसक्ने आदि कारणहरूले पनि समाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, राजनैतिक पक्षमा महिलाहरू पछाडि परेका छन् ।

७.६.२ स्वास्थ्य स्थिति

जिल्लामा स्वास्थ्य सम्बन्धी प्राप्त तथ्याङ्कका आधारमा हेर्दा महिला स्वास्थ्यको स्थिति पनि नाजुक नै छ । सरदर आयु ५१ (अनुमानित) वर्ष रहेको नुवाकोट जिल्लामा पुरुषको आयु भन्दा महिलाको आयु कम रहेको छ । मातृ मृत्युदर ५३९ जना प्रति लाख देखिएको छ । टी.टी. लिने आमाको प्रतिशत पनि न्यून ३५.०६ प्रतिशत रहेका त्यस्तै तालीम प्राप्त स्वास्थ्यकर्मीको सहयोगमा जन्मेको शिशु ११.७२ प्रतिशत मात्र छन् भने सरदर ३४ महिनाको अन्तरमा महिला गर्भवती हुने गरेको देखिन्छ (जि.स्वा.का. २०५९) । यसले गर्दा पनि महिलाको स्वास्थ्य स्थिति कमजोर हुने गरेको स्पष्ट छ ।

पुरुषहरूको पहिलो विवाह गर्दाको उमेर औसत २१.३७ वर्षको तुलनामा महिलाको सो औसत उमेर १९.८७ रहेको छ । त्यस्तै पूर्ण वयस्क नभई १०-१४ वर्षका विवाहित जनसंख्या ०.९९५ रहनु ले त्यस्ता महिलाको अवस्था जोखिम हुन सक्ने र मातृ मृत्युदर अझ बढ्न सक्ने देखिन्छ ।

त्यस्तै बालबालिकाको स्थिति हेर्दा हाल ६१.५ जना प्रतिहजार शिशु मृत्युदर छ भने बालमृत्युदर ९१ जना प्रति हजार रहेको छ । त्यस्तै रोग प्रतिरोधात्मक खोप पाउने १ वर्ष मुनीका बालबालिका ७४.२० प्रतिशत मात्र छन् । दादूराको खोप प्राप्त गर्ने बालबालिका संख्या पनि कम रहेको छ । जिल्लामा हाल हेपाटाइटिस “बि” सूईको सेवा प्रदान गर्न थालिएको छ । त्यस्तै भिटामिन “ए” प्राप्तीका संख्या पनि कम देखिन्छ । त्यस्तै आयोडिन युक्त नुन प्रयोगकर्ताको प्रतिशत यकिन गर्न नसकिएतापनि अधिकांश ग्रामीण भेगमा यस प्रकारको नुन प्रयोग कर्ताको कमी नै छ ।

७.६.३ सामुदायिक र राजनीतिक कृयाकलापमा महिला सहभागिता

केही वर्ष यता स्थानीय निकायमा जनप्रतिनिधीहरू नरहेको अवस्था रहेतापनि हालसम्म पनि महिला वर्गको राजनीतिमा पहुँच निकै कम देखिन्छ । वि.सं. २०५८ सालको आम निर्वाचनमा कूल ६१ गा.वि.स.का गा.वि.स. अध्यक्ष मध्ये १ जना (साल्मे) मात्र महिला अध्यक्ष रहनुबाट पनि यो तथ्य बुझ्न सकिन्छ । त्यस्तै कुल निर्वाचित जनप्रतिनिधीहरू मध्ये यस जिल्लामा कम प्रतिशत मात्र महिला जनप्रतिनिधी (तल्ला स्तरका) हुनु, संसदमा महिला उमेदवार विजयी नहुनु आदिले पनि राजनैतिक क्षेत्रमा महिला सहभागिता अत्यन्त न्यून देखिन्छ । ग्रामीण क्षेत्रमा विकास निर्माण र सामुदायिक कार्यहरूको उपभोक्ता समिति सम्बन्धी तथ्याङ्क उपलब्ध हुन नसके तापनि करिब ३५ प्रतिशतको हाराहारीमा महिला प्रतिनिधित्व भएको पाइन्छ । जिल्लामा प्रशासनिक र रोजगारीको क्षेत्रमा पनि महिला सहभागिता कम नै देखिन्छ ।

७.६.४ महिला रोजगारीको स्थिति

जिल्लामा त्यति धेरै उद्योग धन्दाको स्थापना नभइसकेको परिप्रेक्ष्यमा सामान्य पसल, होटल व्यवसाय र निजी क्षेत्रका व्यवसाय मात्र रोजगारी प्रदायक भएकाले यस्ता क्षेत्रमा महिला सहभागिता अत्यन्तै न्युन छ। आर्थिक उत्पादनका क्षेत्र र साधनमा पुरुषको पहुँच नै बढि रहेको ले रोजगार प्राप्त महिलाको पनि श्रोत र साधनमा पहुँच पुग्न सकेको छैन। पुरुष प्रधान समाजमा समस्त व्यवसायको सहयोगीको रूपमा महिला योगदान रहने गरेको पाइएको छ। कार्यालयमा कार्य गर्नेहरूको महिला संख्या पनि कम नै छ र त्यो पनि नीति निर्माण तहमा नभई तल्ला तहमा मात्र रहेका छन्। महिला रोजगारीको राम्रो स्थिति शैक्षिक क्षेत्रमा मात्र देखिन्छ।

रोजगारीको हिसाबले जिल्लामा कूल १८०१ कर्मचारी मध्ये १५६ जना (९ प्रतिशत) मात्र महिला कर्मचारी रहनु र त्यसमा पनि तल्ला तहमा महिला कर्मचारीहरूको संख्या धेरै रहेको देखिन्छ भने निर्णायक तथा नीति निर्माण तहमा महिलाहरूको प्रतिनिधित्व ज्यादै न्युन देखिन्छ।

तालिका ७.२५ : जिल्लामा हाल कार्यरत महिला पुरुष कर्मचारी सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | कार्यालयको किसिम | महिला | पुरुष | जम्मा |
|-----------|-----------------------|-------|-------|-------|
| १ | विकास तर्फका कार्यालय | ११० | ८२७ | ९३७ |
| २ | साधारण तर्फ | ८ | २१५ | २२३ |
| ३ | संस्थान समिति तर्फ | ३८ | ६०३ | ६४१ |
| कुल जम्मा | | १५६ | १६४५ | १८०१ |

श्रोत : जि.वि.स. नुवाकोट

ग्रामीण महिलाहरू घरदैलो, घांसपानी, बालबालिकाको पालन पोषण, चुल्होचौकी, सरसफाई, सामाजिक सांस्कृतिक कार्य, घरेलु धन्दा आदि परिवारिक बोझले गर्दा नै राजनैतिक एवं शैक्षिक क्षेत्रमा समय दिन नसक्नाले पनि पछि परेका हुन् भन्न सकिन्छ। स्थानीय निकायको वडा स्तरमा १ जना र गा.वि.स. मा १ जना निर्वाचन र मनोनयन अनिवार्य हुनुपर्ने भनी सरकारले महिला सहभागितामा वृद्धि ल्याउन गरेको कानूनी व्यवस्था भएतापनि सो वाध्यता भन्दा माथि नेपाली महिला समाज उठ्न सकेको देखिदैन।

राजनैतिक दलहरू भने जिल्लामा आफ्ना महिला भातृ संगठन गठन र परिचालन गरिनुले भने राजनीतिमा महिला संलग्नता बढ्दै गएको देखिन्छ।

७.६.५ वैवाहिक स्थिति

यस जिल्लामा बालविवाह र अनमेल विवाहको स्थिति भयावह छ। राजधानीको नजिकै पर्ने ओखरपौवा गा.वि.स. को कागती गाउँले सामूहिक बालविवाहकोलागि चर्चा पाइसकेको भएतापनि स्थानीय संघ/संस्था हरुको सक्रियताले हाल यस्तो प्रचलन निर्मुल नै नभएतापनि घट्दै गएको सकारात्मक सुधार हो भन्न सकिन्छ। कतिपय स्थानका तामाङ समुदायमा बहुविवाह र अनमेल विवाहको कुप्रवृत्ति अब सम्म घट्न सकेको पाइदैन। बालविवाह,

वहुविवाह र अनमेल विवाहले भविष्यमा गएर घरायसी तनाव, वैमनस्यता र भै भगडाले छुट्टै भिन्न भएर वस्नु पर्ने, पारपाचुके गरेर वस्नु पर्ने र विधवा समेत हुनु पर्ने परिणाम आदि आउने गरेकाले महिलाहरूको जीवन ज्यादै कष्टकर हुने गरेको छ । यस्तो संख्या कति छ भन्ने हाल एकिन गर्न नसकिएतापनि १०-१४ वर्षको विवाहिता महिलाको प्रतिशत जिल्लास्तरमा करीव १ प्रतिशत रहेको छ । विकट ग्रामीण इलाकामा यस्ता बाल विवाह, बहुविवाह र अनमेल विवाह गर्नेहरूको संख्या अधिक मात्रामा रहेको छ ।

७.६.६ समग्र सामाजिक स्थिति

परम्परागत समाजमा महिलालाई पढाउनु हुदैन जागिर खुवाउनु हुदैन, बाहिर घुमफिर गर्न जानुहुदैन, धेरै बोल्नु हुदैन, बाठो हुनु हुदैन भन्ने परम्परागत रूढीवादी सोचाईबाट नुवाकोट जिल्लाका महिला पनि ग्रसित छन् । समयको अन्तराल संगै विस्तार विस्तार चेतना र शिक्षाको कारणले त्यो धारणा हट्दै गएको छ । तैपनि महिलाको पुरुष भन्दा बढि पारिवारीक कार्यबोभ हुनु, बालबालिका हुर्काउने जिम्मेवारी पर्नु आदि कारणले महिलाहरूलाई अधि बढेर आफ्नो प्रतिभा र क्षमता प्रदर्शन गर्न व्यवधान पर्ने गर्छ भने कतिपय महिलाहरू स्वक्षमताको मुल्याङ्कन गर्न नसक्नाले पनि पछि परेका छन् । लैङ्गिक भेदभावको कुप्रथा विशेषगरि ब्राम्हण/क्षेत्री तथा परिवर्तित समाजमा संक्रमण कालको परिस्थितिमा बढि हुने गरेको पाइएको छ । जिल्लामा घरमुलिको रूपमा महिला रहने प्रकृयाको कमी र महिलाको नाममा जग्गा जमिन नराख्ने परम्पराले गर्दा श्रोत र साधनमा महिलाका पहुँचमा न्यून रहेको छ । चेलीवेटी वेचविखन, घरेलु हिंसा र अपराधबाट पुनर्स्थापन गर्नको लागि जि.वि.स., जि.वि.स. जित, महिला पुनर्स्थापन केन्द्र र महिला विकास शाखा लगायत घरेलु तथा साना उद्योग विकास समितिले आयमुलक तालिमको माध्यमद्वारा सहयोगी भूमिका निर्वाह गरिराखेको देखिन्छ ।

महिलाहरू पछि पर्नुको महत्वपूर्ण कारण मध्ये घरेलु हिंसा, हत्या, महिला अधिकारको हनन, महिला प्रतिको अमानवीय व्यवहार र चेलीवेटी वेचविखन आदि रहेका छन् । नेपालका अन्य जिल्लाको तुलनामा चेलीवेटी वेचविखनमा नेवाकोट जिल्ला अग्रता पाएको जिल्लाको रूपमा चिनीएको छ ।

७.६.७ बाल श्रमिक दर

जिल्लामा बालश्रमिक (१०-१४ वर्ष भित्र) का रूपमा साधारण होटल व्यवसायमा संलग्न रहने बालबालिकाहरूको यकिन तथ्याङ्क प्राप्त हुन नसकेतापनि यो संख्या त्यति धेरै देखिदैन । तर नजिकको राजधानी शहरमा यस्ता बाल श्रमिक, बाल मजदुरहरूको संख्या भने निकै धेरै रहेको पाउन सकिन्छ । जिल्ला बाहिर यसरी बालबालिकाहरूको तथ्याङ्क लिने कुनै निकाय नभएकोले यस किसिमको संख्या आंकलन गर्न कठिन छ । नगरोन्मुख क्षेत्र त्रिशुली, विदुर, बट्टार, कोलनी क्षेत्रमा र काठमाण्डौ गएर श्रम, मजदुरी गरी वस्ने बालबालिको स्थिति भयावह छ । जिल्ला बाल संगठनले पनि यस सम्बन्धी तथ्याङ्क तयार पारेको छैन । तैपनि यस जिल्लामा बाल श्रमिक दर ३९.२४ प्रतिशत रहेको अनुमान गरिएको छ । जिल्लामा सिविन, बाल संगठन, बाल

मन्दिर, महिला विकास कार्यक्रम, न.पा., जि.वि.स.ले बालबालिकाका पक्षमा कार्यहरु गर्दै आएकापनि यतिले मात्र बाल विकास सम्भव देखिदैन ।

७.६.८ बाल विकास केन्द्र

जिल्लामा केही बाल विकास केन्द्रहरु रहेता पनि अनाथ टुहुरा र द्वन्द पिडित बाल बालिकाहरुको लागि बाल गृह स्थापना भएको छैन ।

तालिका ७.२६ : बाल विकास सम्बन्धी विवरण

| क्र.सं. | प्रबर्द्धक संस्था | स्थान | संख्या |
|---------|-------------------------------|-----------------------|--------|
| १ | बाल कल्याण समिति | वि.न.पा. ३ | १ |
| २ | सिबिन | वि.न.पा. | १ |
| ३ | बाल मन्दिर | वि.न.पा. ३ | १ |
| ४ | बाल विकास केन्द्र, (जि.शि.का) | विभिन्न गा.वि.स.हरुमा | |

स्रोत : जिल्ला विकास समिति, २०५९ ।

जिल्लामा बाल मनोरञ्जनका लागि कुनै पार्क, उद्यान, क्रिडास्थल, हालसम्म संचालनमा रहेको देखिएको छैन र कतै बाल गृह/बाल सुधार गृह स्थापना पनि भएको छैन । बाल मन्दिरको नामबाट बाल विकास र बालशिक्षामा टेवा पुऱ्याइरहेको भन्ने पाइन्छ । जिल्लामा विस्तार बाल क्लवहरु गठन गर्ने प्रकृयाको थालनी भएको पाइन्छ । निजि विद्यालयहरुमा पुर्व प्राथमिक शिक्षा अन्तर्गत केही शिशु किन्डर गार्डेन जस्ता तहहरुको व्यवस्था भएका छन् ।

७.६.९ महिला तथा बालबालिकाको विकास क्षेत्रमा विद्यमान समस्या र सवालहरु

१. शिक्षामा लैङ्गिक विभेदले गर्दा जिल्लामा महिलाको शैक्षिक स्थिति पुरुषको तुलनामा कमजोर छ । औपचारिक शिक्षा क्षेत्रमा त्यो फरकपन अझ व्यापक देखिन्छ । त्यस्तै दलित, उत्पिडित, जनजातीका बाल शिक्षा पनि त्यस्तै कमजोर अवस्थामा रहेका छन् ।
२. जिल्लामा शैक्षिक रोजगारी वाहेक अन्य स्थानमा रोजगारीको स्थिति नगन्य नै छ । रोजगारीमा महिलालाई समान अवसर प्राप्त छैन । यस्तो अवसर गैःह सरकारी क्षेत्रमा भन्दा सरकारी क्षेत्रमा ज्यादै न्युन छ ।
३. अझै पनि १ वर्ष मुनिका २५ प्रतिशत बालबालिकाले सबै प्रकारका खोप सेवाबाट वञ्चित हुनु परेको तथ्य रहेको छ ।
४. लाटा, बहिरा, अन्धा बालबालिकाका लागि विशेष शिक्षा पर्याप्त रूपमा पुगेको छैन भन्ने तिनीहरुको उद्धार र संरक्षणका लागि प्रभावकारी लक्षित कार्यक्रम हालसम्म संचालन भएका छैनन् ।

५. गरिबीका कारणले पनि महिला र बालबालिका स्वविकासमा संलग्न हुन सकेका छैनन् । आय आर्जनको अवसर नहुनाले पनि बालशिक्षा र महिला शिक्षामा समदृष्टि पुग्न नसकेको देखिन्छ ।
६. जिल्लामा बाल बालिका र महिला लक्षित शिक्षा र शसक्तिकरण एवं विकास कार्यक्रम कम छ भने सडक बालबालिका, अनाथ बालबालिकाको संख्या बढ्दै गएकोले त्यसका लागि हालसम्म योजना बनेको देखिदैन ।

७.६.१० महिला तथा बालबालिकाको विकासको क्षेत्रमा सम्भावनाहरु

१. महिला सशक्तिकरणको लागि महिला द्वारानै कार्यक्रम संचालन परिचालन भएमा नै सशक्तिकरण सम्भव देखिन्छ । त्यसैले जिल्लाका सबै गा.वि.स.मा प्राथमिक विद्यालय सञ्जाल, महिला विकास कार्यक्रमका सामुदायिक परिचालिका, विभिन्न गै.स.स.का सामाजिक परिचालिका हरुलाई सक्रिय परिचालन गर्न सकेमा महिला सशक्तिकरण तथा विकासमा प्रगति हुने सम्भावना रहन्छ ।
२. राजनैतिक प्रतिबद्धताको वृद्धि हुँदै गएमा जिल्लामा राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक लगायत विभिन्न क्षेत्रमा महिला सहभागितालाई जोड दिन सकेमा नै लैङ्गिक विभेद हट्न गई समविकासलाई अघि बढाउन सक्ने देखिन्छ ।

७.७ उपेक्षित, उत्पीडित, दलित तथा जनजातिको स्थिति

२०५८ सालको राष्ट्रिय जनगणना अनुसार जिल्लाको कूल दलित (कामी, दमाई, सार्की) जनसंख्या १७८३५ रहेको देखिन्छ । जिल्लाको कूल जनसंख्यामा दलित जनसंख्याको अंश ६.२ प्रतिशत रहेको छ र यिनको साक्षरता दर २२.१ प्रतिशत रहेको देखिन्छ । यिनीहरुको साक्षरता दर तालिका ७.२७ मा प्रस्तुत गरिएको छ ।

त्यस्तै जिल्लामा जनजाति (तामाङ्ग, मगर, गुरुङ, कुमाल, राई) को जनसंख्या १२३६८७ रहेको छ । यो संख्या कुल जनसंख्याको ४२.९ प्रतिशत रहेको छ ।

तालिका ७.२७ : उपेक्षित, उत्पीडित, दलित तथा जनजातिको साक्षरता स्थिति

| उपेक्षित, उत्पीडित, दलित तथा जनजातिको नाम | जनसंख्या प्रतिशत | साक्षरता प्रतिशत |
|---|------------------|--------------------|
| कामी (वि.क.) | ३.२ | १७.८ |
| नेपाली | १.६३ | २०.२१ |
| मिजार | १.४ | १८.८ |
| मगर | २.३ | ३४.६ |
| कुल जम्मा | ७.८२ | २२.१ (सरदर) |

श्रोत : जिल्ला शिक्षा कार्यालय, विदुर

सामाजिक रूपमा पिछडिएका दलित विद्यार्थीहरूको पूर्व प्रा.वि. र प्रा.वि. सम्मको कक्षागत विवरण तालिका ७.२८ मा दिइएको छ ।

तालिका ७.२८ : प्राथमिक तहका दलित विद्यार्थी विवरण

| क्र. सं. | विवरण | ६-१० जनसंख्या | कक्षा १ | कक्षा २ | कक्षा ३ | कक्षा ४ | कक्षा ५ | कक्षा १-५ जम्मा |
|----------|--------|---------------|---------|---------|---------|---------|---------|-----------------|
| १ | छात्र | | ११०३ | ४५७ | ३७८ | २६४ | १८५ | २३८७ |
| २ | छात्रा | | ९६३ | ४०१ | २६० | १८७ | १४९ | १९६० |
| जम्मा | | | २०६८ | ८५८ | ६३८ | ४५१ | ३३४ | ४३४७ |

श्रोत: जिल्ला शिक्षा कार्यलय, विदुर

जिल्लामा उपेक्षित, उत्पीडित जनजातिको आर्थिक स्थितिको यकिन तथ्याङ्क नभएतापनि उनीहरूको गरिबीको स्तर ज्यादै भयावह रहेको देखिन्छ । हाल सम्म त्यस्ता जनजातिलाई ठूलो रूपमा लक्षित कार्यक्रम बाट नसमेटिएता पनि गरिबी निवारण कार्यक्रममा उनीहरूलाई प्राथमिकता प्राप्त वर्गको रूपमा औल्याउने गरेको पाइन्छ ।

७.७.१ रोजगारीको स्थिति

जिल्लामा रहेका उपेक्षित, उत्पीडित जनजातिहरू मध्ये नगण्य मात्रामा सरकारी पेशामा संलग्न रहेका छन् भने उद्योग, वन्द व्यापारमा पनि यिनीहरू लागेका छैनन् । तर उनीहरू स्वयंले आफ्ना लघु र कुटीर उद्योगहरू संचालन गर्दै स्वरोजगारमा नै सिमित रहेका छन् भने जनजातिहरू मध्ये मगर जातीहरू नै बढि मात्रामा शिक्षित र रोजगार देखिन्छन् । अधिकांश दमाई, कामी, सार्कीहरू आफ्नो परम्परागत पेशामा सिमित रहेको पाइन्छ ।

७.७.२ स्वास्थ्य स्थिति

जातिगत आधारमा स्वास्थ्य स्थितिको तथ्याङ्क उपलब्ध हुन नसकेतापनि स्वास्थ्य सेवामा उनीहरूको पहुच त्यति देखिदैन । गरिबी र अशिक्षाका कारणबाट पनि उनीहरू त्यस क्षेत्रमा पुग्न नसकेको हो । प्रत्येक गा.वि.स.मा उप-स्वास्थ्य चौकी उपलब्ध गराउने नीति लिएतापनि त्यस्ता वर्गहरू त्यस सेवाको दायराबाट बाहिर रहेको देखिएको छ । त्यस्ता उत्पीडित गरिब जनजातीहरूको सेवालार्ई निःशुल्क गराउने व्यवस्था भएमा उनीहरूले पनि सेवा पाउन सक्ने सम्भावना रहन्छ ।

७.७.३ सामुदायिक र राजनीतिक क्रियाकलापमा सहभागिता र प्रतिनिधित्व

समाजको रुढिवादी परम्परा, सांस्कृतिक विभेद, चेतनाको कमी आदिले गर्दा त्यस्ता जनजाती सामाजिक रूपले निस्क्रिय रहेका हुन्छन् । सामुदायिक विकास निर्माण कार्यमा त्यति धेरै सहभागी भएका पनि छैनन् र भएकाहरू पनि केवल शारीरिक श्रम कार्यको रूपमा दाताका रहेका तर नीति निर्माण र निर्णायक तहमा एकदम नगण्य रूपमा मात्र रहेका छन् ।

७.७.४ सेवा र सुविधा माथिको पहुच

दलित, जनजातिहरूका लागि सरकारी क्षेत्रबाट प्राप्त हुने सेवा र सुविधाको पहुँच पनि कम नै देखिन्छ । सेवा सुविधाको अवसरमा उच्च जाति र त्यस्ता जनजातिगत रूपमा विभेद नराखेतापनि दलित र जनजातिहरूको पहुँच अपेक्षाकृत रूपमा अरुको अनुपातमा कम नै देखिन्छ । सामाजिक रीतिरिवाज, सांस्कृतिक विभेदले उनीहरूको मानसिकतालाई नै असर पारेको कारण उनीहरू स्वतः स्फूर्त रूपमा सेवा लिन सक्दैनन् र त्यस्ता सेवा हाम्रालागि होइन भन्ने धारणा राख्दछन् । त्यसैले त्यस्ता जनजातीलाई लक्षित गरेर बाखापालन, बाखा साटासाट जस्ता सानातिना कार्यक्रमहरू लैजान थालेकाले विस्तार विस्तार उनीहरूको पहुँच बढ्दै जानु सुधारात्मक संकेतको रूपमा लिन सकिन्छ ।

७.७.५ उत्पीडित, उपेक्षित, दलित तथा जनजातिका विद्यमान समस्या र सवालहरू

१. जिल्लाका उत्पीडित, उपेक्षित, दलित जनताको शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक तथा रोजगारीको दृष्टिबाट अन्य जातिहरू भन्दा पिछ्छडिएका छन् ।
२. सरकारद्वारा घोषित लक्ष्य र नीति तथा कार्यान्वयन गरिने लक्षित कार्यक्रमहरू प्रभावकारी रूपमा कार्यान्वयनमा ल्याउन सकेको देखिदैन ।
३. दलित जनजातिहरूको सशक्तिकरणको कार्यक्रम एकदम कम हुनाले सामाजिक, राजनैतिक रूपमा सक्रिय रहन नसकेको कारण उनीहरूको त्यस्ता क्षेत्रमा सहभागिता शुन्य प्रायः छ ।
४. त्यस्ता जनजातिहरू सामुदायिक रूपमा पनि जातिगत र वर्गिय धारणाले छुट्टै उनीहरूको मात्र समुदाय निर्माण गरी बसेका हुनाले वाहिरी संसार संग उनीहरू सहजै घुलमिल हुन हिचकिचाउने र नहुने प्रकृतिका हुन्छ । बालपन देखि नै त्यस्तै परम्परा रहेको कारण अर्का पुस्तामा त्यहि परिवृत्ति दोहोरिन पुग्छ र सधै नै ती जनजातिहरू सामुदायिक रूपमा अलग (isolate) रहन्छन् ।
५. मुलुकी ऐनले जस्तो सुकै विभेदमुक्त नीति अवलम्बन गरेतापनि कतिपय समुदायमा जतीय छुवाछुतको भावना अभै विद्यमान छ । दलित-दलित र जनजातिहरू बीचमा नै विभेदात्मक स्थिति रहनु अभू ठूलो समस्या हो ।

७.७.६ उपेक्षित, उत्पीडित, दलित तथा जनजातिका सम्भावना तथा अवसरहरू

१. जिल्लाका ग्रामीण र दुर्गम भेगमा बाहेक अन्य भागमा छुवाछुतको भावना क्रमशः छुट्टै गई उनीहरूको सक्रियतामा पनि वृद्धि हुँदै गइरहेको छ ।
२. पिछ्छडिएको वर्ग उत्थानका लागि सरकारी र गैर सरकारी क्षेत्रबाट पनि लक्षित कार्यक्रमहरू थपिदै गएको पाइन्छ, भने प्रत्येक राजनैतिक दलले पनि आ-आफ्नो घोषणा पत्रमा त्यस सम्बन्धि प्रतिवद्धता व्यक्त गर्दै त्यस तर्फ कार्यान्वयनमा उत्रन थालेको हामी पाइन्छ ।
३. लैङ्गिक अवधारणामा क्रमशः जातीय भेदभावको प्रसङ्ग पनि जोडिन थालेकोले सम्पूर्ण वर्ग जात- जातिलाई विकासको मुलप्रवाहमा लैजानुपर्छ भन्ने धारणा क्रमशः अधि आइरहेको छ ।

४. विगतमा कार्यान्वयन गरिएका लक्षित कार्यक्रमको अनुगमन, मूल्याङ्कन र प्रभाव अध्ययन त्यति धेरै हुँदैन थियो भने हाल आएर यस्ता कार्यक्रमको प्रभाव अध्ययन हुन थालेको छ ।

७.८ द्वन्द र जन आन्दोलन २०६३ प्रभावित व्यक्ति/परिवारको स्थिति

जिल्ला भरिमा विगत १० वर्षको द्वन्दको दौरानमा विद्रोही पक्षका १४८ जना, राज्य पक्षका ११७ जना र ऐतिहासिक जन आन्दोलन-२ २०६२/२०६३ मा १ जना (चन्द्र बहादुर वयलकोटी सार्की) गरी २६६ जनाले ज्यान गुमाएको थाहा हुन आएको छ । त्यस्तैजना अपाङ्ग र घाइते हुन गएका छन् । राज्य पक्षका मरेका मध्ये सुरक्षाकर्मी, राष्ट्रसेवक र पहुँचवाला राजनैतिक दलका व्यक्तिहरूका परिवारले राज्यले व्यवस्था गरे अनुसारको राहत सुविधा पाएका तर विद्रोही पक्ष र सर्वसाधारण व्यक्तिका परिवारले कुनै राहत नपाएको थाहा हुन आएको छ । यसरी आफ्नो परिवारका व्यक्तिले ज्यान गुमाएका वा अपाङ्ग बनेका कारणवाट यस्ता परिवारहरूको जीवन यापन साच्चैँ नाजुक रहेको र बाल बच्चाहरू भन्ने प्रभावित भएको बुझिएको छ । बाल बच्चाहरू शिक्षाको अवसरवाट मात्र वन्चित नभै जीवन यापनको लागि बाल मजदुरको रूपमा काम गर्ने गरेका, या खाते सडक बाल बालिका हुन पुगेका स्थिति रहेको छ । त्यस्तै अपाङ्ग बनेका व्यक्तिहरू स्वर्गको जीवन मात्र कष्ट प्रद नभै परिवारलाई समेत दुःख दर्द, पीडा थपिएको छ । यसरी देशमा निरंकुश राजतन्त्रको अन्त्य र प्रजातन्त्र/लोकतन्त्र स्थापनाको महान युद्धमा शहादत प्राप्त गरेका र अपाङ्ग बनेका व्यक्तिहरूको घटना विवरण कार्तिक २२, २०६३ को राजनैतिक सहमति र नेपालको अन्तरिम संविधान २०६३ ले व्यवस्था गरे अनुरूप “सत्य निरूपण तथा मेल मिलाप आयोग ” ले प्रकाशमा ल्याउने नै छ । आयोगको प्रतिवेदन र त्यसपछि राज्यवाट व्यवस्था गरिने राहत सुविधा उपलब्ध नभइन्जेल यस्ता परिवारको जीवनयापन सहज बनाउनका लागि तत्कालै आवश्यक राहतको व्यवस्था गर्न अति आवश्यक देखिएको छ । हालै जि.वि.स.ले रु.३० लाख को द्वन्द पिडित राहत कोष खडा गरी राहत उपलब्ध गराउने तर्फ शुरुवात गरेको छ । तर यो रकम एकदमै न्यून छ । यसलाई वृद्धि गरी न्यूनतम रु.५ करोडको अक्षय कोष को स्थापना गर्नु पर्ने देखिन्छ । साथै जीवन उत्सर्ग गर्ने व्यक्तिका परिवार र अपाङ्ग बनेका परिवारका बाल बच्चाको शिक्षा, वयस्क व्यक्तिलाई रोजगारी, स्वास्थ्योपचारको सुविधा तथा शीप मूलक तालिम को व्यवस्था गर्नु जरुरी देखिएको छ ।